MagBook

arihant

सिविल सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा, राज्य लोक सेवा आयोग तथा
अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अति आवश्यक

भारतीय इतिहास

NCERT पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का कवरेज (कक्षा 6 से 12)

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम एवं पूर्व परीक्षा
के प्रश्नों की TOPICWISE
कवरेज 3000+ MCQs एवं
5 प्रैक्टिस सेट्स सहित

MagBook

सिविल सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा, राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अति आवश्यक

भारतीय इतिहास

NCERT पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का कवरेज (कक्षा 6 से 12)

लेखक
राजन शर्मा, प्रवीण कुमार

arihant
अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

arihant

अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

सर्वाधिकार सुरक्षित

© प्रकाशक

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके—इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरण नहीं किया जा सकता है। 'अरिहन्त' ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, संपादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं हैं।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'मेरठ' होगा।

रजि. कार्यालय

'रामछाया' 4577/15, अग्रवाल रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002
फोन: 011-47630600, 43518550

मुख्य कार्यालय

कालिन्दी, टी०पी० नगर, मेरठ (यूपी)– 250002, **फोन:** 0121-7156203, 7156204

शाखा कार्यालय

आगरा, अहमदाबाद, बरेली, बंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी,
हैदराबाद, जयपुर, झाँसी, कोलकाता, लखनऊ, नागपुर तथा पुणे

ISBN : 978-93-25797-21-5

:

Published by Arihant Publications (India) Ltd.

PO No : TXT-XX-XXXXXXX-X-XX

प्रोडक्शन टीम

पब्लिशिंग मैनेजर	:	अमित वर्मा	इनर डिज़ाइनर	:	अंकित सैनी
प्रोजेक्ट हैड	:	करिश्मा यादव	पेज लेआउट	:	जितेन्द्र कुमार, दीपक कुमार
प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर	:	मनीष कुमार	प्रूफ रीडर	:	प्रभा गुप्ता, प्राची मित्तल
कवर डिज़ाइनर	:	शानू मंसूरी			

'अरिहन्त' की पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी
वेबसाइट **www.arihantbooks.com** पर लॉग इन करें या **info@arihantbooks.com** पर संपर्क करें।

Follow us on

विषय-सूची

प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास

1. **प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ** 1-4
   - पाषाण काल
   - महापाषाण काल

2. **सिन्धु घाटी की सभ्यता** 5-9
   - भौगोलिक विस्तार एवं कालक्रम
   - सिन्धु सभ्यता का पतन

3. **वैदिक संस्कृति** 10-15
   - वैदिक संस्कृति का उद्भव
   - ऋग्वैदिक काल
   - उत्तरवैदिक काल
   - वैदिक साहित्य

4. **मगध का उत्कर्ष एवं प्रारम्भिक विदेशी आक्रमण** 16-20
   - महाजनपदों का उदय
   - मगध का उत्कर्ष
   - सूत्रकालीन सभ्यता
   - विदेशी आक्रमण

5. **छठी सदी ई. पू. के धार्मिक आन्दोलन** 21-28
   - जैन धर्म
   - बौद्ध धर्म

6. **मौर्य एवं मौर्योत्तर काल** 29-39
   - मौर्य साम्राज्य
   - मौर्योत्तर काल

7. **गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल** 40-51
   - गुप्त काल
   - गुप्तोत्तर काल/पूर्व मध्यकाल

8. **दक्षिण भारत** 52-58
   - महापाषाण काल
   - संगम युग : चोल, चेर, पाण्ड्य
   - दक्षिण भारत के अन्य राजवंश

9. **प्राचीन भारत के विविध पहलू** 59-65
   - भारत का नामकरण व इतिहास के स्रोत
   - शिक्षा एवं साहित्य
   - धर्म, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

10. **अरब एवं तुर्क आक्रमण** 66-68
    - सिन्ध की विजय
    - महमूद गजनवी
    - मुइजुद्दीन मुहम्मद गौरी

11. **दिल्ली सल्तनत** 69-82
    - गुलाम वंश (1206-1290 ई.)
    - खिलजी वंश (1290-1320 ई.)
    - तुगलक वंश (1320-1414 ई.)
    - सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)
    - लोदी वंश (1451-1526 ई.)
    - सल्तनत का प्रशासन
    - सल्तनतकालीन समाज एवं अर्थव्यवस्था

12. **प्रान्तीय राजवंश** 83-91
    - विभिन्न क्षेत्रीय राजवंश: बंगाल, जौनपुर, मालवा, गुजरात, कश्मीर, अहोम, उड़ीसा, मेवाड़, मारवाड
    - विजयनगर साम्राज्य
    - बहमनी साम्राज्य

13. **भक्ति एवं सूफी आन्दोलन** 92-97
    - भक्ति आन्दोलन
    - सूफी आन्दोलन

14. **मुगल काल** 98-115
    - बाबर (1526-1530 ई.)
    - हुमायूँ (1530-1556 ई.)
    - शेरशाह सूरी (1540-1545 ई.)
    - अकबर (1556-1605 ई.)
    - जहाँगीर (1605-1627 ई.)
    - शाहजहाँ (1627-1658 ई.)
    - औरंगजेब (1658-1707 ई.)
    - मुगल प्रशासन एवं समाज

15. **मराठा राज्य और संघ** 116-120
    - मराठा शक्ति का अभ्युदय
    - शिवाजी (1627-1680 ई.)
    - शिवाजी के उत्तराधिकारी
    - पेशवाओं के काल में मराठा शक्ति का उत्कर्ष

16. **मुगलों का पतन एवं स्वायत्त राज्यों का उदय** 121-126
    - उत्तरवर्ती मुगल
    - विभिन्न प्रान्तीय स्वायत्त राज्य

17. **भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन** 127-133
प्रमुख यूरोपीय कम्पनियाँ
बंगाल में अंग्रेजों का विस्तार

18. **गवर्नर, गवर्नर-जनरल एवं वायसराय** 134-139
बंगाल के गवर्नर
बंगाल के गवर्नर-जनरल
भारत के गवर्नर-जनरल
भारत के वायसराय

19. **ब्रिटिश काल की प्रशासनिक एवं आर्थिक नीतियाँ** 140-146
प्रशासनिक नीतियाँ
औपनिवेशिक आर्थिक नीतियाँ
धन का बहिर्गमन सिद्धान्त

20. **सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन** 147-152
सुधार आन्दोलन के कारण
सामाजिक तथा धार्मिक सुधार संस्थाएँ
दलित जातियों के आन्दोलन

21. **कृषक, श्रमिक और जनजातीय आन्दोलन** 153-161
किसान आन्दोलन
भारत के श्रमिक आन्दोलन
गाँधीजी एवं मजदूर आन्दोलन
जन एवं जनजातीय आन्दोलन
अन्य क्षेत्रीय आन्दोलन

22. **1857 ई. का विद्रोह** 162-166
1857 ई. के विद्रोह का कारण
विद्रोह का प्रसार
विद्रोह की असफलता के कारण
विद्रोह के परिणाम

23. **भारत में प्रेस तथा शिक्षा का विकास** 167-174
प्रेस तथा समाचार-पत्रों का विकास
भारत में शिक्षा का विकास
शिक्षा का अधोमुखी निस्यन्दन सिद्धान्त
भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904
राधाकृष्ण आयोग, 1948-49

24. **भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन-I** 175-182
कांग्रेस की स्थापना (1855 ई.)
बंगाल विभाजन (1905 ई.)
क्रान्तिकारी आन्दोलन
गाँधीजी के प्रारम्भिक सत्याग्रह
खिलाफत आन्दोलन (1919 ई.)
रॉलेट एक्ट (1919 ई.)
जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (1919 ई.)
असहयोग आन्दोलन (1920-22 ई.)
राष्ट्रीय राजनीति (1922-29 ई.)
साइमन कमीशन नेहरू रिपोर्ट

25. **भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन-II** 183-193
क्रान्तिकारी आन्दोलन का द्वितीय चरण
वामपन्थी आन्दोलन
सविनय अवज्ञा आन्दोलन
प्रान्तीय चुनाव (वर्ष 1937)
भारत छोड़ो आन्दोलन
आजाद हिन्द फौज
भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम, 1947

कला एवं संस्कृति

26. **धर्म एवं दर्शन** 194-198
धर्म
दर्शन
भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय

27. **भाषा और साहित्य** 199-203
भारतीय भाषाएँ
अंग्रेजी भाषा और साहित्य

28. **स्थापत्य एवं चित्रकला** 204-214
प्राचीन स्थापत्य एवं वास्तुकला
मध्यकालीन स्थापत्य
आधुनिक स्थापत्य
चित्रकला

29. **संगीत एवं नृत्य** 215-221
भारतीय संगीत के अंग
हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक शैलियाँ
भारतीय नृत्य

30. **रंगमंच एवं सिनेमा** 222-227
आधुनिक भारतीय रंगमंच
भारत की प्रमुख लोकनाट्य शैलियाँ
सिनेमा

31. **प्रमुख मेले, महोत्सव एवं पर्व** 228-232
प्रमुख मेले
प्रमुख भारतीय महोत्सव
प्रमुख पर्व

- **परिशिष्ट** 233-240
- **प्रैक्टिस सेट्स** 1-5 241-260
- **विगत वर्षों के प्रश्न-सॉल्वड पेपर सेट** 1 261-273
- **विगत वर्षों के प्रश्न-सॉल्वड पेपर सेट** 2 274-280

प्रश्नों की प्रवृत्ति एवं फोकस टॉपिक्स

प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

इस अध्याय में परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बिन्दु पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण काल है। अगर हम विगत वर्षों के प्रश्न–पत्रों में पूछे गए प्रश्नों का अध्ययन करें तो हम पाएँगे कि अधिकांश प्रश्न इस काल में उपयोग किए जाने वाले औजारों व इस समय की जाने वाली कृषि तथा इस काल के आरम्भिक स्थलों से पूछे गए हैं।

सिन्धु घाटी की सभ्यता

इस अध्याय में महत्त्वपूर्ण सिन्धु घाटी सभ्यता का भौगोलिक क्षेत्रफल, नगर योजना, धर्म, संस्कृति, कला, स्थापत्य, कृषि व वाणिज्य तथा महत्त्वपूर्ण सिन्धु घाटी सभ्यता स्थल है। इस टॉपिक से पूछे गए अधिकांश प्रश्न इस काल में बनी मुहरों, प्रचलित शवाधान रीतियाँ, हड़प्पाई लिपि, हड़प्पा काल में प्रयोग की जाने वाली भार व माप की इकाई, उनके व्यापार व सम्बन्धित आयात–निर्यात व नदियों के किनारे बसे महत्त्वपूर्ण हड़प्पाई स्थलों से सम्बन्धित हैं।

वैदिक संस्कृति

वैदिक संस्कृति प्राचीन भारतीय इतिहास का परीक्षा की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण खण्ड है। कुछ महत्त्वपूर्ण टॉपिक वैदिक शासन व्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक जीवन, इस काल में धर्म का स्वरूप और वैदिक साहित्य है। पूर्व वर्षों में पूछे गए प्रश्नों में वैदिक कर्मकाण्ड, वेद तथा उनकी विषय–वस्तु, वेद और उनके उपनिषद्, वैदिक समाज में स्त्रियों की दशा, वैदिक काल के महत्त्वपूर्ण अधिकारी, चारों आश्रम, वैदिक काल में प्रचलित विवाह की रीतियाँ प्राचीन नदियों के नाम आदि मुख्य हैं।

मगध का उत्कर्ष एवं प्रारम्भिक विदेशी आक्रमण

विगत वर्षों में इस टॉपिक से अधिक प्रश्न नहीं पूछे गए हैं, फिर भी यदि हम पूर्व वर्षों के प्रश्न–पत्रों का अध्ययन करें तो जो भी प्रश्न इस अध्याय में पूछे गए हैं। वे महाजनपदों की राजधानियों, मगध साम्राज्यवाद के उदय के कारण, हर्यंक वंश, नन्द वंश व सिकन्दर के भारत पर आक्रमण से सम्बन्धित है।

छठी सदी ई. पू. के धार्मिक आन्दोलन

परीक्षा की दृष्टि से कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण टॉपिक जैन धर्म, बौद्ध धर्म और उनका समाज पर प्रभाव, जैन और बौद्ध धर्म के उदय के कारण, महावीर और गौतम बुद्ध का इतिहास, उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, जैन तथा बौद्ध साहित्य। इस अध्याय से लगभग सभी परीक्षाओं में बार–बार प्रश्न पूछे जाते रहे हैं, जो मुख्यत: जैन और बौद्ध धर्म के दर्शन, साहित्य, इन धर्मों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण स्थल, बौद्ध संगीति, जैन और बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय तथा चैत्य और विहारों से सम्बन्धित होते हैं।

मौर्य और मौर्योत्तर काल

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक मौर्य साम्राज्य का उदय, मौर्य प्रशासन, मौर्य राजवंश का इतिहास तथा मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण हैं। अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं में इस अध्याय से प्रश्न मौर्य वंश को जानने के साहित्यिक स्रोत, कौटिल्य, मेगस्थनीज की इण्डिका, अशोक के शिलालेख और स्तम्भ लेख तथा उनमें लिखित आदेश, कलिंग युद्ध का अशोक के जीवन पर प्रभाव और अशोक का धम्म, मौर्य सेना, मौर्य कला और स्थापत्य, उस समय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति से पूछे जाते हैं।

मौर्योत्तर काल परीक्षोपयोगी दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है, कभी–कभी प्रश्न शुंग वंश, हूणों के आक्रमण, इण्डो–ग्रीक सभ्यता व संस्कृति, कनिष्क के शासन तथा इस काल में प्रचलित विभिन्न कला तथा स्थापत्य शैलियाँ, इस समय में समाज की सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी में इस काल में हुए विकास से सम्बन्धित होते हैं।

गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल

परीक्षा की दृष्टि से यह खण्ड बहुत महत्त्वपूर्ण है, जिससे बार–बार प्रश्न पूछे जाते हैं। मुख्यत: प्रश्न गुप्तों की शासन व्यवस्था, गुप्त काल में धर्म, कला स्थापत्य तथा साहित्य, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति, विज्ञान एवं तकनीकी के इस काल में विकास, समुद्रगुप्त के साम्राज्यिक अभियानों, चन्द्रगुप्त के दरबार के नवरत्न, फाह्यान, गुप्त शासकों द्वारा धारण की गई उपाधियों, गुप्तकाल में प्रचलित सिक्कों के प्रकार आदि से सम्बन्धित होते हैं। गुप्तोत्तर काल से परीक्षाओं में अधिकांश प्रश्न हर्ष के शासन, चीनी यात्री ह्वेनसाँग, हर्ष द्वारा रचित साहित्य, हर्ष के समय में आयोजित परिषद्ें तथा चालुक्य शासकों की उपलब्धियों से सम्बन्धित होते हैं।

दक्षिण भारत में सभ्यता का प्रसार

इस अध्याय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण टॉपिक जिनसे परीक्षाओं में प्रश्न पूछे जाते हैं, वे संगम साहित्य, संगम काल में शासन व्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, संगम काल में आयोजित सभाएँ, चोल, चेर और पाण्ड्य राजवंश, इन राजवंशों के शासकों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ, चोल, चेर और पाण्ड्य राजवंश की राजधानियाँ।

प्राचीन भारत के विविध पहलू

इस अध्याय से महत्त्वपूर्ण टॉपिक जिनसे परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं, वे हैं– प्राचीन भारत के राजतन्त्र एवं गणतन्त्र, शिक्षा, साहित्य, धर्म, दर्शन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी है।

दिल्ली सल्तनत एवं अरब आक्रमण

यह अध्याय भारतीय इतिहास PCS में का महत्त्वपूर्ण भाग है, जहाँ से प्रत्येक वर्ष और प्रत्येक परीक्षा जैसे UPSC व PCS में प्रश्न पूछे जाते हैं। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण अध्यायवार; जैसे–दिल्ली सल्तनत का प्रशासन; दिल्ली सल्तनत के महत्त्वपूर्ण शासक, सैन्य संगठन, कृषि की स्थिति, विभिन्न सल्तनत शासकों के अन्तर्गत राजस्व व्यवस्था, इल्तुतमिश के द्वारा किया गया सुधार, रजिया सुल्तान, शासन के सिद्धान्त, अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा किया गया सैन्य सुधार, अलाउद्दीन खिलजी का प्रमुख अभियान एवं प्रशासनिक सुधार, मोहम्मद–बिन–तुगलक द्वारा लिया गया महत्त्वपूर्ण निर्णय, फिरोजशाह तुगलक द्वारा किया गया प्रशासनिक सुधार, दिल्ली सल्तनत में प्रयोग की गई महत्त्वपूर्ण शब्दावली, सल्तनत काल के महत्त्वपूर्ण अधिकारी एवं कर्त्तव्य, विभिन्न शासकों द्वारा स्थापित विभाग एवं उसके कार्य, वस्तुकला एवं संगीत के क्षेत्र में विकास।

प्रान्तीय राजवंश

विजयनगर साम्राज्य परीक्षा के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस अध्याय से कृष्णदेव राय की उपलब्धि, विजयनगर प्रशासन, अष्टदिग्गज तथा बंगाल, उड़ीसा, कश्मीर, गुजरात, मालवा, जौनपुर, मारवाड़ व आमेर के संस्थापक।

भक्ति एवं सूफी आन्दोलन

यह अध्याय महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे संघ लोक सेवा आयोग के प्रारम्भिक परीक्षा में प्रत्येक वर्ष प्रश्न पूछे जाते हैं। इस अध्याय में भक्ति आन्दोलन की शाखाएँ तथा इससे जुड़े प्रमुख सन्त (सूफी आन्दोलन का विकास) महत्त्वपूर्ण है।

मुगल साम्राज्य

भारतीय इतिहास का यह सेक्सन परीक्षा की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस सेक्सन से लगभग सभी परीक्षाओं में प्रश्न पूछे जाते हैं। इस सेक्सन के महत्त्वपूर्ण विषयों में बाबर के आरम्भिक विजय अभियान, शेर शाह सूरी का शासन, अकबर के प्रमुख विजय अभियानों एवं धार्मिक नीतियों एवं औरंगजेब के शासन काल को सम्मिलित किया गया है। पूर्व वर्षों के प्रश्न–पत्रों में इन विषयों से प्रश्न पूछे गए हैं, बाबर द्वारा लड़े गए युद्धों, हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी के मध्य हुई लड़ाइयाँ, शेरशाह सूरी का प्रशासन, सैन्य परिवर्तन एवं सिक्कों का प्रचलन, दीन–ए–इलाही, अकबर के दरबार में नवरत्न, औरंगजेब की धार्मिक नीति, मुगल प्रशासन, मनसबदारी व्यवस्था, मुगल स्थापत्य, साहित्य, चित्रकारी, प्रसिद्ध मुगल इतिहासकार एवं उनके कार्य।

मराठा राज्य और संघ

परीक्षा के दृष्टिकोण से यह अध्याय अति महत्त्वपूर्ण है। इस अध्याय में पुरन्दर की सन्धि, अष्टप्रधान, राजस्व प्रशासन तथा सैन्य प्रशासन महत्त्वपूर्ण हैं।

मुगलों के पतन एवं स्वायत्त राज्यों का उदय

भारतीय इतिहास का यह अध्याय परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस अध्याय के मुगल साम्राज्य के पतन के कारण, औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता तथा हैदराबाद, बंगाल, अवध, मैसूर व पंजाब जैसे क्षेत्रीय राज्यों का उदय महत्त्वपूर्ण है।

भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

इस अध्याय के कुछ महत्त्वपूर्ण टॉपिक हैं, जिनसे पूर्व वर्षों में परीक्षाओं में प्रश्न पूछे गए हैं–भारत में विभिन्न यूरोपीय शक्तियों का आगमन जैसे पुतर्गाली, डच, फ्रांसीसी, ब्रिटिश। ब्रिटिशों की बंगाल विजय, भारत में यूरोपीय कम्पनियों द्वारा फैक्ट्रियों की स्थापना, पुर्तगाली गवर्नर, दक्षिण भारत में एंग्लों–फ्रेंच प्रतिस्पर्द्धा व कर्नाटक युद्ध, प्लासी व बक्सर की लड़ाई, आंग्ल–मैसूर युद्ध।

भारत में गवर्नर/गवर्नर–जनरल तथा वायसराय

इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण वॉरेन हेस्टिंग्स, लॉर्ड कॉर्नवालिस, लॉर्ड वेलेजली, लॉर्ड विलियम बैंटिक, चार्ल्स मेटकॉफ , लॉर्ड डलहौजी, लॉर्ड मेयो, लॉर्ड लिटन, लॉर्ड रिपन, लॉर्ड डलहौजी, डफरिन, लॉर्ड कर्जन, लॉर्ड इरविन, लॉर्ड वेवेल, लॉर्ड माउण्टबेटन। इस खण्ड से अधिकांश प्रश्न इन अधिकारियों की नीतियों से सम्बन्धित होते हैं, जो भारत में ब्रिटिश राज की स्थापना में सहायक हुई।

जनजातीय एवं कृषक विद्रोह

इस अध्याय में अध्ययन के महत्त्वपूर्ण टॉपिक संन्यासी विद्रोह, सन्थाल विद्रोह, पागलपन्थी विद्रोह, फराजी व्रिदोह तथा मुण्डा विद्रोह। इस खण्ड से विगत वर्षों में अधिकांश प्रश्न विभिन्न विद्रोहों के शुरू होने के पीछे के कारण, विद्रोह के नेता तथा विद्रोहों से सम्बन्धित क्षेत्र तथा उनके आरम्भ होने के वर्ष आदि से पूछे जाते हैं।

1857 ई. का विद्रोह

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक 1857 ई. के विद्रोह के कारण, विद्रोह का प्रभाव, विद्रोह की असफलता के कारण हैं। विगत वर्षों में इस टॉपिक से प्रश्न सहायक सन्धि और डलहौजी की व्यपगत की नीति के विद्रोह के पनपने में उत्तरदायित्व, तात्कालिक कारण, विद्रोह के महत्त्वपूर्ण केन्द्र और उनके नेता, विद्रोह से सम्बन्धित ब्रिटिश अधिकारी, 1857 ई. के विद्रोह से जुड़े विभिन्न लेखक और उनकी रचनाएँ आदि से प्रश्न पूछे जाते हैं।

भारत में प्रेस तथा शिक्षा का विकास

परीक्षा की दृष्टि से इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक आंग्ल–प्राच्य भाषा विवाद, चार्टर एक्ट 1813, भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904, शिक्षा की वर्द्धा योजना 1937, भारतीय प्रेस की मुक्ति, वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट 1878,। वुड्स डिस्पेच, सेडलर कमीशन, हण्टर कमीशन, लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति, हार्टोग समिति आदि से विगत वर्षों में प्रश्न मुख्यतया पूछे जाते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में प्रशासनिक सुधार एवं सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक 1857 ई. के बाद भारत में ब्रिटिश शासन व्यवस्था में आए परिवर्तन, सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन के कारण, विभिन्न सुधार आन्दोलनों के महत्त्वपूर्ण नेता, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसॉफिकल आन्दोलन, रामकृष्ण आन्दोलन, मुस्लिम सुधार आन्दोलन, सिख समाज सुधार आन्दोलन आदि। आन्दोलनों में विभिन्न नेताओं की भूमिका; जैसे–राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, यंग बंगाल आन्दोलन, विभिन्न सुधार आन्दोलनों के उद्देश्य, आन्दोलनों से जुड़ी विभिन्न प्रकाशन सामग्री, निम्न जातीय आन्दोलन आदि से प्रश्न पूछे जाते हैं।

भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन-I

इस अध्याय में परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण टॉपिक राष्ट्रवाद के उदय के कारण, आरम्भिक राष्ट्रवादियों की गतिविधियाँ, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन, नरमपन्थी व गरमपन्थी गुटों का गठन, नरमपन्थी व गरमपन्थी गुटों के उदय के कारण, बंगाल का विभाजन, स्वदेशी आन्दोलन, गदर पार्टी है। विगत वर्षों में इस अध्याय से प्रश्न बंगाल में राजनीतिक गठबन्धनों, इल्बर्ट बिल–विवाद, कांग्रेस–पूर्व की विभिन्न संस्थाएँ, नरमपन्थियों द्वारा अपनाए गए तरीके तथा नरमपन्थी एवं गरमपन्थी में वैचारिक मतभेद, महत्त्वपूर्ण गरमपन्थी नेता; जैसे–तिलक, लाल लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल आदि। सूरत की फूट (1907), हॉर्डिंग बम काण्ड, लखनऊ पैक्ट (1916), तिलक और एनी बेसेण्ट का होमरुल आन्दोलन, महत्त्वपूर्ण कांग्रेस अधिवेशन और उनके अध्यक्ष। इसके अतिरिक्त गाँधी का भारत आगमन, गाँधी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, रौलेट एक्ट (1919), असहयोग आन्दोलन। इस खण्ड से अधिकांशतया पूछे जाने वाले प्रश्न चम्पारन सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, अहमदाबाद कपड़ा मिल विवाद, मजदूर संघ आन्दोलनों का उदय, जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड, खिलाफत आन्दोलन, स्वराजियों के उद्देश्य और उपलब्धियाँ।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन–II

साइमन कमीशन, जिन्ना का 14 सूत्री फॉर्मूला, लाहौर कांग्रेस अधिवेशन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, गाँधी–इरविन पैक्ट, भारत शासन अधिनियम, 1935 आदि महत्त्वपूर्ण टॉपिक हैं। विगत वर्षों में प्रश्न–पत्र साइमन कमीशन के बहिष्कार, नेहरू रिपोर्ट और उसकी महत्त्वपूर्ण संस्तुतियाँ, दाण्डी मार्च, गोलमेज सम्मेलन, कम्यूनल अवॉर्ड, अखिल भारतीय किसान सभा आदि से पूछे जाते रहे हैं। महत्त्वपूर्ण मुद्दे अगस्त प्रस्ताव (1940), क्रिप्स मिशन, भारत छोड़ो आन्दोलन, भारतीय राष्ट्रीय सेना, राजगोपालाचारी फॉर्मूला, कैबिनेट मिशन योजना (1946)। माउण्टबेटन योजना है।

अगस्त प्रस्ताव के उपबन्धों व्यक्तिगत सत्याग्रह, क्रिप्स मिशन को स्वीकृत किए जाने के पीछे कारण, भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम तथा भारत छोड़ो आन्दोलन से जुड़े महत्त्वपूर्ण नेता, वर्धा प्रस्ताव, आईएनए मुकदमा, वेवेल योजना और शिमला कॉन्फ्रेन्स, प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस, भारत विभाजन के कारण।

धर्म और दर्शन एवं भाषा और साहित्य

इस अध्याय में परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी टॉपिक धार्मिक सम्प्रदाय, भारतीय दर्शन, भारतीय भाषाओं का महत्त्व आदि हैं।, पूर्व वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के सिद्धान्तों जैन धर्म, बौद्ध धर्म, दर्शन की विभिन्न शाखाओं; जैसे–सांख्य, योग, मीमांसा आदि से पूछे गए हैं।

संगीत एवं नृत्य, प्रमुख मेले/महोत्सव, पर्व–रंगमंच एवं सिनेमा

महत्त्वपूर्ण टॉपिक जिनसे प्रश्न बार–बार पूछे जाते हैं, वे हैं– हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रमुख विशेषताएँ, शास्त्रीय संगीत के विविध प्रकार, विभिन्न वाद्य यन्त्र, भारत के शास्त्रीय नृत्य, भारत के लोक नृत्य, भारत में रंगमंच के रूप, भारत के प्रमुख मेले, महोत्सव एवं त्योहार हैं।

भारतीय स्थापत्य एवं चित्रकला शैलियाँ

परीक्षा की दृष्टि से यह टॉपिक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, भारतीय इतिहास के इस खण्ड से लगभग सभी परीक्षाओं में प्रश्न पूछे जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण वैदिक हड़प्पा कालीन स्थापत्य, स्थानीय स्थापत्य शैलियाँ, प्राचीन स्मारक, गुफा चित्रकारी आदि हैं। इसके अतिरिक्त चोल कालीन स्थापत्य, विजयनगर स्थापत्य, उत्तर और दक्षिण भारतीय स्थापत्य शैली प्रसिद्ध कलाकृतियाँ एवं मुगल चित्रकला शैली हैं।

अध्याय एक
प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

''जिस काल के विषय में कोई लिखित विवरण प्राप्त नहीं होता उसे प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ विकास का आधार थीं, जिसकी जानकारी का प्रमुख स्रोत उस काल के औजार थे। भारत में सभ्यता एवं संस्कृति के प्रारम्भ को यहीं से समझा जा सकता है।''

मानव का विकास

- मानव का वर्तमान स्वरूप उसके क्रमिक विकास का परिणाम है। मानव का उद्विकास वानर से माना जाता है। मानव जैसे प्राणी अथवा आदिम होमीनिड्स सबसे पहले अफ्रीका में अभिनूतन काल (प्लिस्टोसीन) के आरम्भ में प्रकट हुए। भारत में मानव के विकास के अद्यतन साक्ष्य शिवालिक पहाड़ियों के **अभिनूतन** (Pliocene) युगीन निक्षेपों से मिलते हैं। मानव के जिस रूप के साक्ष्य यहाँ प्राप्त हुए हैं, उसे **रामापिथेकस** के नाम से जाना जाता है, परन्तु पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में आदि मानव का कोई **जीवाश्म** (फॉसिल) नहीं मिला है। भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य नर्मदा घाटी के हथनौरा नामक स्थान से मिला है, जो मध्यपाषाण काल से सम्बन्धित स्थल है।

इतिहास का वर्गीकरण

प्राचीन भारतीय इतिहास को स्रोतों की विविधता के आधार पर तीन भागों में बाँटा जाता है

प्रागैतिहासिक काल (मानव उत्पत्ति से 3000 ई.पू. तक)

- इस काल की जानकारी का एकमात्र स्रोत, उस समय के मानवों द्वारा प्रयोग की गई वस्तुएँ हैं। इस काल में मानव लेखन कला से अपरिचित था, इसलिए इस काल को 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। भारतीय प्रागैतिहास को उद्घाटित करने का श्रेय डॉ. प्राइमरोज नामक एक अंग्रेज को जाता है, जिसने 1842 ई. में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर नामक स्थान में प्रागैतिहासिक औजारों की खोज की।

आद्य ऐतिहासिक काल (3000 ई.पू. से 600 ई.पू.)

- इस काल का मानव लिपि से तो परिचित था, परन्तु वह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है, यह 'आद्य-ऐतिहासिक काल' कहलाता है। हड़प्पा सभ्यता भारत के आद्य ऐतिहासिक काल से सम्बन्धित है।

ऐतिहासिक काल (600 ई.पू. से आगे)

- इस काल का मानव लिपि से परिचित था और वह लिपि पढ़ी भी जा चुकी है, यह 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है।

प्रागैतिहासिक काल का विभाजन

पाषाण काल (Stone Age)

पुरापाषाण काल (Paleolithic Age) (10 लाख से 10 हजार ई. पू.)	मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age) (10 हजार से 7 हजार ई. पू.)	नवपाषाण काल (Neolithic Age) (7 हजार ई. पू. के बाद)
निम्न पुरापाषाण काल (Lower Paleolithic Age) (10 लाख से 50 हजार ई. पू.)	मध्य पुरापाषाण काल (Middle Paleolithic Age) (50 हजार से 40 हजार ई. पू.)	उच्च पुरापाषाण काल (Upper Paleolithic Age) (40 हजार से 10 हजार ई. पू.)

पाषाण काल

- भारतीय पाषाण युग को मानव द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पत्थर के औजारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है— **पुरापाषाण काल**, **मध्यपाषाण काल** और **नवपाषाण काल**।
- भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरूआत 1863 ई. में जियोलॉजिकल सर्वे से सम्बद्ध अधिकारी **रॉबर्ट ब्रूसफूट** ने की, उसे चेन्नई के समीप पल्लवरम से एक पाषाण उपकरण प्राप्त हुआ कनिघंम। अन्ततः सर **मार्टीमर व्हीलर** के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ। ए. कनिंघम को 'प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व का जनक' कहा जाता है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्कृति मन्त्रालय के अधीन एक विभाग है।

पुरापाषाण काल

- तकनीकी विकास तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर पुरापाषाण काल को निम्न, मध्य एवं उच्च पुरापाषाण काल में विभाजित किया गया है।

निम्न पुरापाषाण काल

- पुरापाषाण काल का सबसे लम्बा समय 'निम्न पुरापाषाण काल' के रूप में जाना जाता है। इस समय मनुष्य पत्थरों (क्वार्ट्जाइट) से निर्मित हथियारों (हस्तकुठार, विदारणी, खण्डक) का उपयोग करता था। अधिकांश पुरापाषाण युग हिम युग में गुजरा था।
- निम्न पुरापाषाण स्थल भारतीय महाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं, जिनमें असम की घाटी, सोहन घाटी, नर्मदा घाटी एवं बेलनघाटी प्रमुख हैं। इस काल के लोग शिकारी एवं खाद्य संग्राहक की श्रेणी में आते हैं।

मध्य पुरापाषाण काल

- मध्य पुरापाषाण काल में शल्क उपकरणों की प्रधानता बढ़ गई तथा कच्चे माल के रूप में **क्वार्ट्जाइट** के स्थान पर **चर्ट** और **जैस्पर** प्रमुख हो गया। इस काल में फलकों की सहायता से बेधनी, छेदनी एवं खुरचनी जैसे उपकरण बनाए गए।
- फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को **फलक संस्कृति** भी कहा जाता है। एच डी सांकलिया ने नेवासा (गोदावरी नदी के तट पर) को प्रारूप स्थल घोषित किया है।

उच्च पुरापाषाण काल

- उच्च पुरापाषाण काल आधुनिक मानव अर्थात् **होमोसेपियन्स** के अस्तित्व का युग था। इस काल में मानव उपकरणों के निर्माण में हड्डी, हाथी दाँत एवं सींगों का प्रयोग करने लगा था।
- उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों में तक्षणी एवं खुरचनी के उपरोक्त अस्थि के उपकरण महत्त्वपूर्ण थे। मानव रहने के लिए शैलाश्रयों का प्रयोग करने लगा। इस काल में नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ।

मध्यपाषाण काल

- हिम युग के अन्त के पश्चात् मध्यपाषाण काल प्रारम्भ हुआ। भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई, जब सी एल कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र में लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले। इस काल के औजार छोटे पत्थरों से बने हुए हैं, जिन्हें **माइक्रोलिथिक** या सूक्ष्म पाषाण कहा गया है।
- भारत में मानव अस्थि-पंजर सर्वप्रथम मध्यपाषाण काल से ही प्राप्त होने लगता है। मध्यपाषाण युगीन औजार बनाने की तकनीक को फ्लूटिंग कहा जाता है। इस काल के कुछ सूक्ष्म औजारों का आकार ज्यामितीय है, जिसमें ब्लेड, क्रोड, त्रिकोण, नव चन्द्राकार तथा समलम्ब औजार प्रमुख हैं।
- मध्यपाषाण काल के लोग शिकार, मछली पकड़ने तथा खाद्य-संग्रहण पर निर्भर करते थे। इस काल में **बागौर** (राजस्थान) तथा **आदमगढ़ भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) से पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होता है। इसी काल में मानव ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू पशु बनाया था।
- राजस्थान में स्थित साम्भर झील निक्षेप के कई मध्यपाषाणिक स्थल प्राप्त हुए हैं, जिनमें नरवा, गोविन्दगढ़ तथा लेखवा प्रमुख हैं। यहाँ से विश्व के सबसे पुराने वृक्षारोपण का साक्ष्य मिला है।
- स्थायी निवास का प्रारम्भिक साक्ष्य सराय नाहर राय एवं महदहा से स्तम्भ गर्त के रूप में मिलता है। **सराय नाहर राय** (उत्तर प्रदेश) से बड़ी मात्रा में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं तथा महदहा से हड्डी का वाणाग्र प्राप्त हुआ है।
- मध्यपाषाण काल के मनुष्यों ने अनुष्ठान के साथ शवों को दफनाने की प्रथा प्रारम्भ की। मध्य भारत के लेखनिया से मध्यपाषाण कालीन शवों को अनुष्ठान के साथ दफनाने का साक्ष्य मिला है।

भीमबेटका की गुफाएँ

भीमबेटका से चित्रकारी के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जो मध्यपाषाण काल से सम्बन्धित हैं। भीमबेटका (Bhimbetaka) का चट्टानी शरणस्थल भोपाल से 45 किमी पश्चिम में स्थित है। यूनेस्को ने भीमबेटका शैल चित्रों को विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया है। इन गुफाओं में जीवन के विविध रंगों को पेण्टिंग के रूप में उकेरा गया, जिनमें हाथी, साम्भर, हिरन आदि के चित्र हैं। इस काल के लोगों ने गहरे लाल, हरे, उजले तथा पीले रंगों का प्रयोग किया।

नवपाषाण काल

- पहला नवपाषाणिक स्थल एच सी मेस्यूरर के द्वारा 1860 ई. में उत्तर प्रदेश में खोजा गया। नवपाषाण या नियोलिथिक शब्द का प्रयोग सबसे पहले **सर जॉन लुबाक** ने 1865 ई. में किया था।

  पुरातत्त्वविद् मिल्स बुरकिट के अनुसार,

  —पशुओं को पालतू बनाना, कृषि व्यवहार का प्रथम प्रयोग, घिसे तथा पॉलिशदार पत्थर के औजार एवं मृद्भाण्डों का निर्माण नवपाषाण काल की प्रमुख विशेषता है।
- पाकिस्तान के बलूचिस्तान में अवस्थित मेहरगढ़ तथा भारत के कश्मीर में स्थित बुर्जहोम एवं गुफ्कराल महत्त्वपूर्ण नवपाषाण कालीन स्थल हैं। बुर्जहोम में **गर्त निवास** का साक्ष्य मिलता है, जहाँ कब्रों में पालतू कुत्ते भी मालिकों के शवों के साथ दफनाए जाते थे।
- **चिरांद** (बिहार) से हड्डियों के उपकरण पाए गए हैं, जो मुख्य रूप से हिरण के सींगों के हैं। मृद्भाण्ड निर्माण का प्रारम्भ नवपाषाण से हुआ। **मृद्भाण्ड** का प्राचीनतम साक्ष्य **चौपानीमाण्डो** से प्राप्त हुआ है।

- कर्नाटक में संगनकल्लू (मैसूर) तथा पिकलीहल से 'राख के टीले' प्राप्त हुए हैं। **महगड़ा** (बेलन घाटी) से गौशाला के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। दक्षिण भारत में प्रयुक्त होने वाली पहली फसल रागी थी।
- **कोल्डिहवा** (उत्तर प्रदेश) से वन्य एवं कृषिजन्य दोनों प्रकार के चावल के साक्ष्य मिलते हैं। यह धान की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य है।
- महाराष्ट्र में बोरी नामक स्थान से प्राप्त पत्थर के उपकरणों को 14 लाख वर्ष पुराना बताया गया है।
- निम्न पुरापाषाण काल में क्रोड उपकरणों की प्रधानता थी।
- सर्वप्रथम तीर कमान का विकास मध्यपाषाण काल में हुआ। इस काल में लोग छोटे जानवरों का भी शिकार करने लगे।
- प्राचीनतम स्थायी जीवन (बस्ती) के साक्ष्य मेहरगढ़ से मिले हैं।

ताम्रपाषाण काल

- मानव ने सर्वप्रथम **ताँबा** धातु का प्रयोग किया, जिस काल में लोगों ने पत्थर के साथ-साथ ताँबे के हथियारों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया, उसे ताम्रपाषाण युग (2000 ई.पू. से 500 ई.पू.) कहा गया। ताम्रपाषाण काल के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुद्राय के थे। भारत में ताम्र पाषाण अवस्था के मुख्य क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (अहाड़ एवं गिलुण्द), पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा, कायथा और एरण), पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिणी-पूर्वी भारत हैं।
- **मालवा संस्कृति** की एक विलक्षणता है—मालवा मृद्भाण्ड, जो ताम्रपाषाण मृद्भाण्डों में उत्कृष्टतम् माना गया है। सबसे विस्तृत उत्खनन पश्चिमी महाराष्ट्र में हुए हैं, जहाँ उत्खनन हुए हैं, वे स्थल हैं—अहमदनगर के जोरवे, नेवासा एवं दैमाबाद, पुणे में चन्दौली, सोनेगाँव एवं इनामगाँव।
- **जोरवे संस्कृति** ग्रामीण थी, फिर भी इसकी कई बस्तियाँ; जैसे—दैमाबाद और इनामगाँव में नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी। जोरवे स्थलों में सबसे बड़ा दैमाबाद है। दैमाबाद की ख्याति ताँबे की वस्तुओं की उपलब्धि के लिए है। **दैमाबाद** से ताँबे का रथ चलाता, मनुष्य, साँड, गैण्डे तथा हाथी की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। **इनामगाँव** एक बड़ी बस्ती है, जो किलाबन्द है तथा खाई से घिरी हुई है। ताम्रपाषाणिक स्थलों में सबसे बड़ा उत्खनित ग्रामीण स्थल एच डी आकलिया द्वारा उत्खनित नवदाटोली है, जहाँ से सर्वाधिक फसल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- **अहाड़ संस्कृति** का प्राचीन नाम ताम्बावती अर्थात् ताँबा वाली जगह है। गिलुण्द इस संस्कृति का स्थानीय केन्द्र माना जाता है। यहाँ एक प्रस्तर फलक उद्योग के अवशेष मिले हैं। अहाड़ के लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे। यहाँ से ताँबे की बनी कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ तथा कई तरह की चादरें प्राप्त हुई हैं।
- **कायथा** के मृद्भाण्डों पर प्राक् हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। ताम्रपाषाणिक बस्तियों के लुप्त होने का कारण अत्यल्प वर्षा (सूखा) माना जाता है। कायथा से स्टेटाइट और कॉर्नेलियन जैसे कीमती पत्थरों की गोलियों के हार पात्रों में जमे पाए गए हैं। गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति भी एक महत्त्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति है। इसका काल 2000 से 1500 ई.पू. निर्धारित किया गया है। गैरिक मृद्भाण्ड पात्र का नामकरण हस्तिनापुर में हुआ था।

प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृति

संस्कृति	काल
अहाड़ संस्कृति	2100 ई.पू. 1800 ई.पू.
कायथा संस्कृति	2100 ई.पू. 1800 ई.पू.
सावाल्दा संस्कृति	2100 ई.पू. 1800 ई.पू.
प्रभास संस्कृति	1800 ई.पू. 1200 ई.पू.
मालवा संस्कृति	1700 ई.पू. 1200 ई.पू.
रंगपुर संस्कृति	1500 ई.पू. 1200 ई.पू.
जोरवे संस्कृति	1400 ई.पू. 700 ई.पू.

महापाषाण काल

पत्थर की कब्रों को महापाषाण कहा जाता था। इन कब्रों में मानवों को दफनाया जाता था। महापाषाण काल से सम्बद्ध लोक साधारणत: पहाड़ों के ढलान पर रहते थे। दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा कश्मीर में यह प्रथा प्रचलित थी। यहाँ पर कब्रों में लोहे के औजार, घोड़े के कंकाल तथा पत्थर एवं सोने के गहने भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ आंशिक शवाधान की पद्धति भी प्रचलित थी। जिसके तहत शवों को जंगली जानवरों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता था। ब्रह्मगिरि, आदियन्नसूर, मास्की पुदुको, यिंगलपुट, हुनुर, नागार्जुनकोंड आदि इसके प्रमुख शवाधान केन्द्र हैं। महापाषाणकालीन लोग धान के अतिरिक्त रागी की खेती भी करते थे। इतिहासकारों ने महापाषाण काल का निर्धारण 1000 ई. पू. एक हजार से लेकर प्रथम शताब्दी ई. पूं. के बीच किया है।

काल	संस्कृति के लक्षण	मुख्य स्थल	महत्त्व, उपकरण एवं विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गंडासा, खण्डक उपकरण संस्कृति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटानागपुर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश	हस्त कुठार एवं वटिकाश्म उपकरण, होमोइरेक्ट अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं।
मध्य पुरापाषाण काल	फलक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश), नर्मदा घाटी, बांकुड़ा, पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)	फलक, बेधनी, खुरचनी, भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है।
उच्च पुरापाषाण काल	अस्थि, खुरचनी एवं तक्षणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटानागपुर पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश	प्रारम्भिक होमोसेपियन्स मानव का काल, हार्पून, फलक एवं हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
मध्यपाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागौर (राजस्थान) सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्मपाषाण उपकरण बनाने की तकनीक का विकास, अर्द्धचन्द्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थायी निवास का साक्ष्य पशुपालन।
नवपाषाण काल	पॉलिश्ड उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफ्कराल (कश्मीर), लंघनाज (गुजरात), दमदमा, कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिरांद (बिहार), पोचमपल्ली (तमिलनाडु), ब्रह्मगिरि, मास्की (कर्नाटक)	प्रारम्भिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बुनना, भोजन पकाना, मृद्भाण्ड निर्माण, मनुष्य स्थायी निवासी बना, पाषाण उपकरणों की पॉलिश शुरू, पहिया, अग्नि का प्रचलन।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है? **[UKPCS 2010]**

(a) बुर्जहोम (b) कोल्डिहवा
(c) चोपानी-माण्डो (d) माण्डो

2. निम्नलिखित में से किस स्थल से हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं? **[UPPCS 2010]**

(a) चोपानी-माण्डो से (b) काकोरिया से
(c) महदहा से (d) सराय नाहर राय से

3. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण निम्नलिखित विभागों/मन्त्रालयों में से किसका संलग्न कार्यालय है **[JPSC 2011]**

(a) संस्कृति (b) पर्यटन
(c) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (d) मानव संसाधन विकास

4. भारत में किस शैलाश्रय से सर्वाधिक चित्र प्राप्त हुए हैं? **[UPPCS 2008]**

(a) घघरिया (b) भीमबेटका
(c) लेखाहिया (d) आदमगढ़

5. 'राख का टीला' निम्नलिखित किस नवपाषाणिक स्थल से सम्बन्धित है? **[UPPCS 2009]**

(a) बुदिहाल (b) संगनकल्लू
(c) कोल्डिहवा (d) ब्रह्मगिरि

6. नवदाटोली का उत्खनन किसने किया था?

(a) के डी वाजपेयी ने
(b) वी एस वाकंकड़ ने
(c) एच डी सांकलिया ने
(d) मार्टिमर व्हीलर ने

7. निम्नलिखित में से किस एक पुरास्थल से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं? **[UPPCS 2008]**

(a) आम्री (b) मेहरगढ़
(c) कोटदीजी (d) कालीबंगा

8. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं

(a) कोल्डिहवा से (b) लहुरादेव से
(c) मेहरगढ़ से (d) टोकवा से

9. भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ मिलता है? **[UKPCS 2006]**

(a) नीलगिरि पहाड़ियाँ
(b) शिवालिक पहाड़ियाँ
(c) नल्लमाला पहाड़ियाँ
(d) नर्मदा घाटा

10. गैरिक मृद्भाण्ड पात्र (OCP) का नामकरण हुआ था **[UPPCS 2006]**

(a) हस्तिनापुर में (b) अहिच्छत्र में
(c) नोह में (d) लाल किला में

11. उत्खनित प्रमाणों के अनुसार, पशुपालन का प्रारम्भ हुआ था **[UPPCS 2006]**

(a) निचले पूर्व पाषाणकाल में (b) मध्य पूर्व पाषाणकाल में
(c) ऊपरी एवं पाषाणकाल में (d) मध्य पाषाणकाल में

12. वृहत्पाषाण स्मारकों की पहचान की गई है **[UPPCS 2005]**

(a) संन्यासी गुफाओं के रूप में
(b) मृतक को दफनाने के स्थान के रूप में
(c) मन्दिर के रूप में
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

13. खाद्यान्नों की कृषि सर्वप्रथम प्रारम्भ हुई थी

(a) नवपाषाण काल में (b) मध्यपाषाण काल में
(c) पुरापाषाण काल में (d) प्रोटो-ऐतिहासिक काल में

14. 'भीमबेटका' किसके लिए प्रसिद्ध है?

(a) गुफाओं के शैल चित्र
(b) खनिज
(c) बौद्ध प्रतिमाएँ
(d) सोन नदी का उपागम स्थल

15. उस स्थल का नाम बताइए जहाँ से प्राचीनतम स्थायी जीवन के प्रमाण मिले हैं? **[UPPCS 2008]**

(a) धौलावीरा (b) किले गुल मुहम्मद
(c) कालीबंगा (d) मेहरगढ़

16. निम्नलिखित पर विचार कीजिए

1. पशुओं को पालतू बनाना 2. गर्तनिवास का साक्ष्य
3. चित्रकारी का प्रारम्भिक साक्ष्य 4. मृद्भाण्डों का निर्माण

उपरोक्त में से कौन-सा/से नवपाषाण काल की विशेषता है/हैं?

(a) 1, 2 और 3 (b) 2, 3 और 4
(c) 1, 2 और 4 (d) ये सभी

17. प्रागैतिहासिक संस्कृति के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा एक कथन असत्य है?

(a) मानव द्वारा बनाया जाने वाला प्रथम औजार कुल्हाड़ी था
(b) पुरापाषाण काल के मनुष्य सम्भवतः नीग्रेटो जाति के थे
(c) चित्रित मृद्भाण्डों का प्रयोग सर्वप्रथम ताम्रपाषाणिक लोगों ने किया
(d) सर्वप्रथम बड़े-बड़े गाँवों की स्थापना नवपाषाण काल में हुई

1. (a) **2.** (d) **3.** (a) **4.** (b) **5.** (b) **6.** (c) **7.** (b) **8.** (c) **9.** (d) **10.** (a)
11. (d) **12.** (b) **13.** (a) **14.** (a) **15.** (d) **16.** (c) **17.** (d)

अध्याय दो
सिन्धु घाटी की सभ्यता

''सिन्धु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक है। इसका उदय ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों की पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर प्रान्त में हुआ था। सिन्धु नदी घाटी के अनेक स्थल इस सभ्यता के केन्द्रीय स्थल बने। इसका विस्तार पश्चिमोत्तर से दक्षिण और पूर्व की ओर हुआ। अपने विस्तार क्षेत्र के आधार पर यह संसार की सबसे विशाल, प्राचीनतम सभ्यता थी।''

भौगोलिक विस्तार एवं कालक्रम

- प्राचीन सभ्यताओं में क्षेत्रफल की दृष्टि से कांस्ययुगीन, आद्य ऐतिहासिक कालीन सिन्धु घाटी सभ्यता का विस्तार सबसे अधिक था। यह सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीय क्रान्ति की अवस्था को दर्शाती है। यह सभ्यता उत्तर में जम्मू के माण्डा से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने पर स्थित **दैमाबाद** तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान तट पर स्थित **सुत्कागेण्डोर** से लेकर पूर्व में उत्तर प्रदेश के **आलमगीरपुर** तक फैली हुई थी।
- समूचा क्षेत्र त्रिभुजाकार है, जिसका क्षेत्रफल लगभग, 12,99,600 वर्ग किमी है, जो प्राचीन **मिस्र** और **मैसोपोटामिया** की सभ्यता से बड़ा है। रेडियो कार्बन (C-14) पद्धति के आधार पर इसका काल 2350 ई. पू. से 1750 ई. पू. के बीच निर्धारित किया गया है।
- सर्वप्रथम **चार्ल्स मैसन** ने 1826 ई. में हड़प्पा सभ्यता की जानकारी दी। वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष **जॉन मार्शल** के निर्देशन में इस स्थल का ज्ञान हुआ। सर्वप्रथम हड़प्पा की खोज के कारण इसका नाम हड़प्पा सभ्यता पड़ा।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के निर्माताओं का निर्धारण करने का महत्त्वपूर्ण स्रोत कंकाल है। सर्वाधिक कंकाल मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए है। कंकालों के परीक्षण से यह निर्धारित हुआ है कि सिन्धु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थीं।—भूमध्यसागरीय, ऑस्ट्रेलायड, अल्पाइन तथा मंगोलायड। सबसे ज्यादा भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग थे।

नगर योजना

- सिन्धु घाटी सभ्यता की सर्वप्रमुख विशेषता उसकी **नगर योजना** एवं **जल निकास** प्रणाली है। सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। प्रत्येक नगर दो भागों में विभक्त थे—पश्चिमी टीले और पूर्वी टीले। पश्चिमी टीले अपेक्षाकृत ऊँचे, किन्तु छोटे होते थे। इन टीलों पर किले अथवा दुर्ग स्थित थे। इसे **नगर दुर्ग** कहा जाता था।
- पूर्वी टीले या निचले नगर पर नगर या आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिले हैं, जो अपेक्षाकृत बड़े थे। इसमें सामान्य नागरिक, व्यापारी, शिल्पकार, कारीगर और श्रमिक रहते थे। दुर्ग के अन्दर मुख्यत: महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक और सार्वजनिक भवन तथा अन्नागार स्थित थे।
- सामान्यत: पश्चिमी टीला एक रक्षा प्राचीर से घिरा होता था, जबकि पूर्वी टीला नहीं। अपवादस्वरूप **कालीबंगा** का नगर क्षेत्र (पूर्वी टीला) भी रक्षा प्राचीर से युक्त था। लोथल और सुरकोटडा में अलग-अलग दो टीले नहीं मिले हैं, बल्कि सम्पूर्ण क्षेत्र एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे हुए थे, जबकि चान्हूदड़ो एकमात्र ऐसा नगर है, जो दुर्गीकृत नहीं था। धौलावीरा का नगर तीन इकाइयों में बँटा था।

धौलावीरा का साइनबोर्ड

धौलावीरा में एक बड़ा उत्कीर्ण लेख सम्भवत: गिरा हुआ साइनबोर्ड, मुख्य प्रवेश द्वार के पास मिला है, जो हड़प्पाई नगरों से प्राप्त अब तक लिखावट के सबसे बड़े नमूने हैं। यह लिखावट एक काठ की तख्ती पर खुदाई करके उसमें सफेद चूना (जिप्सम) भरकर तैयार की गई है, जिसमें दस संकेताक्षर हैं।

- घरों के दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़क में न खुलकर गलियों में खुलते थे, परन्तु **लोथल** इसका अपवाद है, जहाँ के दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की ओर खुलते थे। कुछ भवनों की दीवारों पर प्लास्टर के भी साक्ष्य मिले हैं। यद्यपि मकान बनाने में कई प्रकार की ईंटों का उपयोग होता था, किन्तु सबसे प्रचलित आकार 4 : 2 : 1 का था।

- पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विशाल साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानियाँ कहा है।
- हड़प्पा सभ्यता के लोग धरती की उर्वरता की देवी मानते थे।
- वर्तमान समय में भी भारतीय समाज में प्रचलित स्वास्तिक (卐) का निशान हड़प्पा सभ्यता में भी प्रचलित था।
- सिन्धु सभ्यता के लोग नीले रंग से परिचित नहीं थे।

- सड़कों के दोनों ओर नालियों के निर्माण के लिए पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया था। घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था, जहाँ इनके नीचे मोरियाँ बनी हुई थीं। ये मोरियाँ ईंटों और पत्थर की सिल्लियों से ढँकी रहती थीं। इन मोरियों में नरमोखे (मेनहोल) भी बने थे। इस सभ्यता के लोग जुड़ाई के लिए मिट्टी के गारे तथा **जिप्सम के मिश्रण** का उपयोग करते थे।
- सैन्धव सभ्यता में बड़े-बड़े भवन मिले हैं, जिनमें स्नानागार, अन्नागार, सभा भवन, पुरोहित आवास आदि प्रमुख हैं। मोहनजोदड़ो का सबसे महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल **स्नानागार** है, जबकि **अन्नागार** सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- सिन्धु सभ्यता एक पूर्ण विकसित सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती है, जिसकी प्रधान विशेषता **नगरीकरण** (Urbanisation) है।

राजनीतिक स्थिति

- डॉ. रामशरण शर्मा के अनुसार, सिन्धु सभ्यता के लोगों ने सबसे अधिक ध्यान वाणिज्य और व्यापार की ओर दिया। अत: हड़प्पा का शासन सम्भवत: वणिक वर्गों के हाथों में था।
- इतिहासकार हण्टर के अनुसार, यहाँ की शासन व्यवस्था जनतान्त्रिक पद्धति से चलती थी। मैके के अनुसार, हड़प्पा सभ्यता में जनप्रतिनिधि का शासन था। **स्टुअर्ट पिग्गट** ने इस सभ्यता की जुड़वाँ राजधानियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के होने का अनुमान लगाया है।

सामाजिक स्थिति

- समाज की इकाई परम्परागत तौर पर परिवार थी। मातृदेवी की पूजा और मुहरों पर अंकित चित्र से यह परिलक्षित होता है कि सैन्धव समाज सम्भवत: **मातृप्रधान** या **मातृसत्तात्मक** था। सैन्धव समाज सम्भवत: अनेक वर्गों; जैसे—पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे एवं श्रमिक में विभाजित थे। व्यापारी वर्ग सबसे प्रभावशाली था। योद्धा वर्ग के अस्तित्व का साक्ष्य नहीं मिला है, लेकिन सम्भवत: सभ्यता में दास-प्रथा का प्रचलन था।
- इस सभ्यता के निवासी खाने-पीने, वस्त्र एवं आभूषण के शौकीन थे। सम्भवत: वे शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों थे। आभूषण सोने, चाँदी और माणिक्य के बनाए जाते थे। गरीब लोग सम्भवत: शंख, सीप और मिट्टी के बने हुए आभूषण पहनते थे। हाथी दाँत तथा शंख का उपयोग अलंकरण तथा चूड़ियाँ बनाने के लिए किया जाता था। आभूषणों का प्रयोग पुरुष और महिलाएँ दोनों करते थे।
- तीन प्रकार के शवाधान—पूर्ण, आंशिक एवं दाह संस्कार का प्रमाण मिलता है। लोथल से तीन युगल शवाधान तथा कालीबंगा से एक युगल शवाधान मिलने से विद्वानों ने यहाँ सती प्रथा के प्रचलन का अनुमान लगाया है।

आर्थिक स्थिति

कृषि

- सैन्धवकालीन अर्थव्यवस्था में समृद्ध कृषि आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार के सन्तुलन पर आधारित थी। दो फसलों की खेती, हल का प्रयोग, फसलों की विविधता सैन्धव कृषि अर्थव्यवस्था की देन है। इस सभ्यता के लोग नौ फसलें—गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, चावल, कपास, अनाज आदि पैदा करते थे। कृषि कार्य हेतु प्रस्तर (पत्थर) एवं काँसे के औजारों का प्रयोग किया जाता था। इस सभ्यता से कोई फावड़ा या फाल नहीं मिला है। सम्भवत: ये लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।
- कालीबंगा से जुते हुए खेत एवं बनावली से मिट्टी का हल जैसा खिलौना प्राप्त हुआ है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं लोथल से अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। सबसे पहले **कपास** पैदा करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है। ये लोग—तरबूज, खरबूजा, नारियल, अनार, नींबू, केला आदि फलों से परिचित थे।

पशुपालन

- बैल, भैंस, गाय, भेड़, बकरी, कुत्ते, खच्चर आदि जानवर पाले जाते थे। लोथल एवं रंगपुर से घोड़े की मृण्मूर्तियाँ तथा सुरकोटडा से घोड़े के अस्थिपंजर प्राप्त हुए हैं, परन्तु घोड़े पालने का स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।
- हाथी को पालतू बना लिया गया था। कूबड़ वाला साँड सबसे प्रिय पशु था। ऊँट की अस्थियाँ कालीबंगा से प्राप्त हुई हैं।
  - चावल की खेती का प्रमाण लोथल एवं रंगपुर से प्राप्त हुआ है।
  - जल संग्रह के लिए बाँधों के निर्माण का साक्ष्य धौलावीरा से प्राप्त हुआ है।
  - हड़प्पा एवं बनावली से जौ के साक्ष्य मिले हैं।
  - लोथल से आटा पीसने वाली पत्थर की चक्की के दो पाट मिले हैं।

व्यापार एवं वाणिज्य

- सिन्धु सभ्यता के लोगों के जीवन में व्यापार का सबसे बड़ा महत्त्व था। इसकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा लोथल में अनाज के बड़े-बड़े कोठारों तथा ढेर सारी सीलों (मृण्मुद्राओं) के एक रूप लिपि और मानकीकृत माप-तौलों के अस्तित्व से होती है। देशी एवं विदेशी दोनों प्रकार के व्यापार उन्नत अवस्था में थे। व्यापार **विनिमय प्रणाली** पर आधारित था।
- देशी व्यापार के परिवहन के साधन बैलगाड़ी व पशु तथा विदेशी व्यापार मुख्यत: जल परिवहन द्वारा होता था। बन्दरगाह या व्यापार तन्त्र से जुड़े प्रमुख नगर थे—बालाकोट, डाबरकोट, सुत्कागेण्डोर, सोत्काकोह, मुण्डीगाक, मालवान, भगतराव तथा प्रभासपाटन।
- मैसोपोटामियाई अभिलेखों में मेलुहा (सिन्धु क्षेत्र) के साथ व्यापारिक सम्बन्ध की चर्चा है। दिलमन सैन्धव एवं मैसोपोटामिया के बीच मध्यस्थ बन्दरगाह था। **दिलमन की पहचान बहरीन द्वीप** से तथा मनका की पहचान **ओमान** से की गई है।

सैन्धव सभ्यता का व्यापार

आयातित वस्तुएँ	स्थल/क्षेत्र
सोना	अफगानिस्तान, फारस, कर्नाटक
चाँदी	ईरान, अफगानिस्तान, मैसोपोटामिया
ताँबा	खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान
टिन	ईरान, अफगानिस्तान
सेलखड़ी	बलूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात
हरित मणि	दक्षिण भारत
शंख एवं कौड़ियाँ	सौराष्ट्र (गुजरात), दक्षिण भारत
नील-रत्न	बदख्शाँ (अफगानिस्तान)
शिलाजीत	हिमालयी क्षेत्र
फिरोजा	ईरान
लाजवर्द	बदख्शाँ, मैसोपोटामिया
गोमेद	सौराष्ट्र (गुजरात)
स्टेटाइट	ईरान
स्फटिक	दक्कन पठार, उड़ीसा, बिहार
स्लेट	काँगडा (हिमाचल प्रदेश)
सीसा	ईरान, राजस्तान, अफगानिस्तान, दक्षिण भारत

उद्योग एवं शिल्प कला

- हड़प्पा सभ्यता की विशाल इमारतों से राजगीरी का प्रमाण मिलता है। मोहनजोदड़ो से ईंटों के भट्टों के अवशेष मिले हैं। हड़प्पाई लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था, वे ताँबा में टिन मिलाकर **काँसा** बनाना जानते थे।
- हड़प्पा में नाव बनाने के साक्ष्य मिले हैं। धातुओं से लघु मूर्तियाँ बनाने के लिए मोम-साँचा विधि प्रचलित थी। लोथल से मिट्टी निर्मित नाव के पाँच नमूने मिले हैं।
- हड़प्पा में सभ्यता का प्रमुख उद्योग सूती-वस्त्र निर्माण था। मुद्रा निर्माण, मूर्ति निर्माण, आभूषण एवं मनके बनाने के साक्ष्य भी मिलते हैं। बर्तन निर्माण भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था।
- भारत में **चाँदी** सर्वप्रथम **सिन्धु सभ्यता** में पाई गई है। सैन्धव सभ्यता के अन्तर्गत कांस्य कला, मृण्मूर्तियाँ, मनका-निर्माण तथा मुहर निर्माण की कला प्रचलित थी।
- सैन्धव सभ्यता के लोग कलाकृतियों के निर्माण के लिए धातु एवं पत्थर का उपयोग कम करते थे। सबसे प्रसिद्ध कलाकृति है—मोहनजोदड़ो से प्राप्त नृत्य की मुद्रा में नग्न स्त्री की काँस्य प्रतिमा। अन्य प्रसिद्ध कलाकृतियाँ हैं—हड़प्पा एवं चान्हूदड़ो से प्राप्त काँसे की गाड़ियाँ, मोहनजोदड़ो से प्राप्त दाढ़ी वाले सिर की पत्थर की मूर्ति (सम्भवत: पुजारी), स्वास्तिक चिह्न, मोहनजोदड़ो से प्राप्त हाथी दाँत पर मानव चित्र।
- मिट्टी के बर्तन में एकरूपता है। ये बर्तन सादे हैं और उन पर लाल पट्टी के साथ-साथ काले रंग की चित्रकारी मिलती है। बर्तनों पर मुद्रा के निशान भी हैं, जिससे ज्ञात होता है कि उन बर्तनों का व्यापार भी होता था। हड़प्पा सभ्यता से पक्की मिट्टी की मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। बर्तनों पर वनस्पति का चित्रांकन पशुओं की अपेक्षा ज्यादा है।

माप-तौल

- तौल की इकाई 16 के आवर्त्तकों में होती थी; जैसे—16, 64, 160, 320, 640 आदि। सोलह के अनुपात की यह परम्परा आधुनिक काल तक चलती रही है। बाट घनाकार, वर्तुलाकार, बेलनाकार, शंक्वाकार एवं ढोलाकार थे।
- सैन्धव लोग मापना भी जानते थे। ऐसे डण्डे पाए गए हैं, जिन पर माप के निशान लगे हुए हैं। इनमें एक काँसे का भी है। मोहनजोदड़ो से सीप का तथा लोथल से हाथी दाँत से निर्मित पैमाना मिला है।

मुहर

- मुहरें हड़प्पा सभ्यता की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ हैं। अब तक लगभग 2000 मुहरें प्राप्त हुई हैं। इनमें से अधिकांश मुहरें (लगभग 500) मोहनजोदड़ो से मिली हैं। आमतौर पर मुहरें चौकोर होती थीं। चौकोर मुहरों पर लेख व पशुआकृति दोनों होती थीं, जबकि बेलनाकार मोहरों पर ज्यादातर लेख होते थे।
- बेलनाकार, वृत्ताकार, आयताकार मुहरें भी मिली हैं। अधिकांश मुहरें **सेलखड़ी** की बनी होती थीं, परन्तु कुछ गोमेद, मिट्टी एवं चर्ट की बनी थीं। मुहरों पर सर्वाधिक चित्र एक सींग वाले साँड (वृषभ) का है।

लिपि

- सिन्धु लिपि में लगभग 64 मूल चिह्न एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं। इस लिपि का सबसे पुराना नमूना 1833 ई. में मिला था और वर्ष 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में आ गई, किन्तु यह अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- लिपि भाव चित्रात्मक है तथा प्रत्येक अक्षर किसी ध्वनिभाव या वस्तु का सूचक है। यह क्रमश: दाईं ओर से बाईं ओर तथा बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती है। इस पद्धति को **बोस्ट्रोफेदोन** कहा गया है। लिपि पर सबसे ज्यादा चिह्न **U** आकार का तथा सबसे ज्यादा प्रचलित चिह्न **मछली** का है।

धार्मिक स्थिति

- सिन्धु सभ्यता के लोग मानव, पशु तथा वृक्ष तीनों रूपों में ईश्वर की उपासना करते थे। इनके धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक तथा व्यावहारिक अधिक था। इस सभ्यता के लोग भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र आदि में विश्वास करते थे। बड़ी संख्या में ताबीजों की प्राप्ति से उनके अन्ध विश्वासों का पता चलता है।
- भक्ति एवं परलोक जैसी अवधारणा इस सभ्यता के धार्मिक जीवन के अंग थे। वे यज्ञ से परिचित थे तथा पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। कालीबंगा से **अग्निवेदिका** का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। इस सभ्यता में कहीं से किसी मन्दिर का अवशेष नहीं मिला है।
- मातृदेवी की उपासना, पशुपति शिव की उपासना, लिंग एवं योनि पूजा, नाग पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, अग्नि पूजा, जल पूजा आदि का प्रचलन था। स्वास्तिक एवं चक्र के साक्ष्य सूर्य पूजा के प्रतीक हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर पद्मासन मुद्रा में एक तीन मुख वाला पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है, जिसके सिर पर तीन सींग हैं। इसके बाईं ओर गैण्डा एवं भैंसा तथा दाईं ओर हाथी एवं बाघ हैं। आसन के नीचे दो हिरण बैठ हुए हैं। इसे **पशुपति शिव** का रूप माना गया है।

सिन्धु सभ्यता का पतन

- सिन्धु सभ्यता के पतन के लिए कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं था, बल्कि अलग-अलग स्थलों के लिए अलग-अलग कारक उत्तरदायी थे।

पतन के सन्दर्भ में विद्वानों के मत

विद्वान्	मत
गार्डन चाइल्ड एवं ह्वीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल, मैके एवं एस आर राव	बाढ़
ओरल स्टाइन, ए एन घोष	जलवायु परिवर्तन
एम आर साहनी	भूगर्भिक परिवर्तन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
के यू आर कनेडी	प्राकृतिक आपदा

सिन्धु सभ्यता की देन

- सिन्धु सभ्यता में प्रचलित अनेक चीजें ऐतिहासिक काल में भी निरन्तर रहीं। इसके कुछ प्रमुख उदाहरण हैं—दशमलव पद्धति पर आधारित मापतौल प्रणाली; नगर नियोजन तथा नालियों की व्यवस्था, बहुदेववाद का प्रचलन, मातृदेवी की पूजा, शिव पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, लिंग एवं योनि पूजा, योग का प्रचलन, जल का धार्मिक महत्त्व, स्वास्तिक, चक्र आदि प्रतीक, ताबीज, तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग, आभूषणों का प्रयोग, बहुफसली कृषि व्यवस्था, अग्निपूजा या यज्ञ, मुहरों का उपयोग, इक्कागाड़ी एवं बैलगाड़ी, आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार आदि।

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल

क्र.सं.	स्थल	भौगोलिक अवस्थिति	खोजकर्ता/वर्ष	प्राप्त साक्ष्य
1.	*हड़प्पा*	रावी नदी मोण्टगोमरी, पाकिस्तान	दयाराम साहनी, 1921	श्रमिक निवास, सोलह भट्टियाँ, काँसे की घरिया, धोती पहने मूर्ति, सीध से छः अन्नागार, कब्रिस्तान R-37, शंख का बना बैल, काँसे का एक्का एवं दर्पण, मंजूषा, बर्तन पर मछुआरे का चित्र आदि।
2.	*मोहनजोदड़ो*	सिन्धु नदी, लरकाना, पाकिस्तान	राखलदास बनर्जी, 1922	मृतकों का टीला, स्नानागार, अन्नागार, काँसे की नग्न नर्त्तकी, कुम्हार के छः भट्टे, सूती कपड़ा, शतरंज की गोटियाँ, दाढ़ी वाला साधु, हाथी का कपाल खण्ड, पशुपति के अंकन की मुहर।
3.	*सुत्कागेण्डोर*	दाश्क नदी, बलूचिस्तान पाकिस्तान	औरेल स्टाइल, 1927 एवं जॉर्ज डेल्स	नदी की तटीय व्यापारिक चौकी, राख से भरा बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी से बनी चूड़ियाँ।
4.	*आमरी*	सिन्धु नदी, सिन्ध, पाकिस्तान	एन जी मजूमदार, 1929 जॉर्ज एफ, डेल्स 1963/79	ऐसा पहला स्थल जहाँ पूर्व हड़प्पा सभ्यता के चिह्न तथा परिवर्ती परिवर्तन के चरणों की पहचान हुई। बारहसिंगा का नमूना।
5.	*चन्हूदड़ो*	सिन्धु नदी, सिन्ध, पाकिस्तान	एन जी मजूमदार, 1931	मुहर उत्पाद केन्द्र, औद्योगिक शहर, मिट्टी की बनी बैलगाड़ी का प्रतिरूप, काँसे की खिलौना गाड़ी, दवात, दुर्ग का अभाव। लिपिस्टिक का साक्ष्य, मनके का कारखाना।
6.	*कालीबंगा*	घग्गर नदी, राजस्थान	अमलानन्द घोष, 1953/60	आरम्भिक हड़प्पा, हल द्वारा जुते खेत, बेलनाकार मुहर, पक्की मिट्टी का हल, सबसे पहले ज्ञात भूकम्प का साक्ष्य, अग्निकुण्ड, ऊँट की हड्डियाँ, कच्ची एवं अलंकृत ईंट, अर्थ-काले रंग की चूड़ी।
7.	*कोटदीजी*	सिन्धु नदी, सिन्ध, पाकिस्तान	फजल अहमद, 1953-54	पूर्व हड़प्पा, मिश्रित स्तर, पत्थर की नींव वाले घर, पत्ती के आकार का वाणाग्र, गर्तावास, गहनों का जखीरा। चाक पर निर्मित मृद्भाण्ड।
8.	*देसलपुर*	कच्छ गुजरात, द्यूद नदी	ए. घोष/एस. आर. राव 1963	टेरेकोटा मुहर, ताँबा मुहर, सेलखड़ी मुहर और भूरे रंग के मिट्टी के बर्तन।
9.	*रोपड़*	सतलुज नदी, पंजाब	यज्ञदत्त शर्मा, 1953-54	वर्ष 1947 के बाद भारत में हड़प्पाकालीन उत्खनन स्थल, ताँबे की कुल्हाड़ी, शंख की चूड़ियाँ, कुत्ते को मालिक के साथ दफनाने का साक्ष्य।
10.	*रंगपुर*	मादर नदी तट, गुजरात	रंगनाथ राव, 1953-54	धान की भूसी, घोड़े की मृण्मूर्ति, कच्ची ईंटों का दुर्ग, पत्थर के फलक।
11.	*सुरकोटडा*	कच्छ, गुजरात	जे पी जोशी, 1954	घोड़े की हड्डियाँ, बर्तन में शवाधान।
12.	*लोथल*	भोगवा नदी, अहमदाबाद गुजरात	रंगनाथ राव, 1957	अन्नागार, सुमेरियन मूल से सम्बन्धित अक्षीय नलिका सहित सोने के मनके, मनका कारखाना गोदीवाड़ा (बन्दरगाह) युग्म शवाधान, धान की खेती।
13.	*आलमगीरपुर*	हिण्डन नदी, उत्तर प्रदेश	यज्ञदत्त शर्मा, 1958	रोटी बेलने की चौकी, कटोरे के टुकड़े, मिट्टी के बर्तन, गंगा-यमुना दोआब का पहला उत्खनित स्थल।
14.	*धौलावीरा*	कच्छ, गुजरात	बी बी लाल, 1959, आर एस बिष्ट, 1990-91	सफेद कुआँ, तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, नागरिक उपयोग के लिए सबसे बड़ा अभिलेख, खेल का मैदान, पत्थर की बनी नेवले की मूर्ति। उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली, बाँधों की शृंखला।
15.	*राखीगढ़ी*	घग्गर नदी, हरियाणा	सूरजभान, 1963	प्राक्हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा के साक्ष्य, भारत में स्थित इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल।
16.	*मोतीथल*	हरियाणा	सूरजभान, 1968	ताँबे की कुल्हाड़ी, संस्कृति के तीनों स्तर
17.	*बनवाली*	सरस्वती नदी, हिसार हरियाणा	आर एस बिष्ट, 1973	पूर्व-हड़प्पा, हड़प्पा तथा उत्तर-नगरीय, सुव्यवस्थित अपवहन तन्त्र का अभाव, स्वर्णपट्ट, मिट्टी के मनके, ताँबे की बनी मछली पकड़ने की बंसी, मिट्टी से बने हल का प्रतिरूप, वास्तविक हल के कुछ टूट, टुकड़े प्रतिरक्षा दीवार के बाहर गहरी और चौड़ी खाई, चक्के के प्रतिरूप (मिट्टी के), सोना लगा हुआ सोना परखने की कसौटी।
18.	*बालाकोट*	अरब सागर, बलूचिस्तान, पाकिस्तान	आर एस बिष्ट 1974/77	पूर्व हड़प्पा के अवशेष भवन निर्माण के लिए कच्ची ईंटों का प्रयोग, सीपों की कार्यशाला।
19.	*भगवानपुरा*	सरस्वती नदी, कुरुक्षेत्र हरियाणा	जी पी जोशी, 1975-76	सफेद, काली एवं आसमानी रंगी की चूड़ियाँ, ताँबे की चूड़ियाँ।
20.	*अल्लाहदीनो*	सिन्धु नदी, पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान	डब्ल्यू ए फेयरसर्विस, 1976	वितरण केन्द्र, पत्थर की विशाल दीवार की नींव, गहनों का जखीरा।
21.	*कुणाल*	सरस्वती नदी, हिसार, हरियाणा	एस आर राव, 1994	चाँदी के दो मुकुट।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिन्धु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण है/हैं? **[IAS 2013]**

1. उनके विशाल महल और मन्दिर होते थे।
2. देवी और देवताओं दोनों की पूजा करते थे।
3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* केवल 2
(c) 1, 2 और 3 *(d)* इनमें से कोई नहीं

2. सिन्धु घाटी संस्कृति वैदिक सभ्यता से भिन्न थी, क्योंकि **[UPPCS 2004]**

(a) इसके पास विकसित शहरी जीवन की सुविधाएँ थीं
(b) इसके पास चित्रलेखा लिपि थी
(c) इसके पास लोहे और रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था
(d) उपरोक्त सभी

3. एक उन्नत जल-प्रबन्धन व्यवस्था का साक्ष्य प्राप्त हुआ है **[UPPCS 2010]**

(a) आलमगीरपुर से *(b)* धौलावीरा से
(c) कालीबंगा से *(d)* लोथल से

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए **[MPPCS 2008]**

1. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़ एवं कालीबंगा सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं।
2. हड़प्पा के लोगों ने सड़कों तथा नालियों के जाल के साथ नियोजित शहरों का विकास किया।
3. हड़प्पा के लोगों को धातुओं के उपयोग का पता नहीं था।

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1 और 3 *(c)* 2 और 3 *(d)* ये सभी

5. निम्नलिखित में से कौन-सा सुमेलित नहीं है? **[UPPCS 2006]**

(a) हड़प्पा – दयाराम साहनी *(b)* लोथल – एस आर राव
(c) सुरकोटडा – जे पी जोशी *(d)* धौलावीरा – वी के थापड़

6. स्थापित सिन्धु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे कौन-सी थीं? **[UPPCS 2009]**

1. सिन्धु 2. चेनाब 3. झेलम 4. गंगा

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 *(d)* ये सभी

7. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित स्थलों में कौन सिन्ध में अवस्थित है?

1. हड़प्पा 2. मोहनजोदड़ो
3. चन्हूदड़ो 4. सुरकोटडा

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 *(d)* ये सभी

8. हड़प्पा संस्कृति के स्थल एवं उनकी स्थिति सम्बन्धी निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक सही सुमेलित नहीं है? **[UPUDA/LDA 2006]**

(a) आलमगीरपुर – उत्तर प्रदेश *(b)* बनावली – हरियाणा
(c) दायमाबाद – महाराष्ट्र *(d)* राखीगढ़ी – राजस्थान

9. सुमेलित कीजिए **[UPPCS 2012]**

सूची I (हड़प्पीय स्थल)	**सूची II** (स्थिति)
A. माण्डा	1. राजस्थान
B. दायमाबाद	2. हरियाणा
C. कालीबंगा	3. जम्मू-कश्मीर
D. राखीगढ़ी	4. महाराष्ट्र

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	*(b)*	2	3	4	1
(c)	3	4	1	2	*(d)*	4	1	2	3

10. सिन्धु घाटी की सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि **[UPPCS 2010]**

(a) वह नगरीय सभ्यता थी *(b)* उसकी अपनी लिपि थी
(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी *(d)* उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था

11. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ था? **[IAS 2002]**

(a) गाय *(b)* हाथी
(c) गैण्डा *(d)* बाघ

12. सुमेलित कीजिए **[IAS 2002]**

सूची I (प्राचीन स्थल)	**सूची II** (पुरातत्त्वीय खोज)
A. लोथल	1. जुता हुआ खेत
B. कालीबंगा	2. गोदीबाड़ा
C. धौलावीरा	3. पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति
D. बनावली	4. हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के दस चिह्नों वाला एक शिलालेख

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	*(b)*	2	4	1	3
(c)	1	2	4	3	*(d)*	2	1	3	4

1. (b) **2.** (d) **3.** (b) **4.** (a) **5.** (d) **6.** (b) **7.** (b) **8.** (d) **9.** (c) **10.** (a) **11.** (a) **12.** (b)

अध्याय तीन
वैदिक संस्कृति

''भारत में आर्यों के द्वारा सप्तसैन्धव क्षेत्र में जिस संस्कृति का विकास हुआ, उसे वैदिक संस्कृति के नाम से जाना जाता है। वैदिक संस्कृति के लोगों के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन तथा उनकी सैद्धान्तिक आस्थाओं को जानने के लिए इसे दो कालों-पूर्व वैदिक अर्थात् ऋग्वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल में बाँटा जाता है। वैदिक संस्कृति ने समाज एवं धर्म के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।''

वैदिक संस्कृति का उद्भव

- वैदिक शब्द वेद से बना है, वेद का अर्थ है-ज्ञान। वैदिक संस्कृति के निर्माता आर्य थे। वैदिक संस्कृति में आर्य शब्द का अर्थ-श्रेष्ठ, उत्तम, अभिजात्य कुलीन तथा उत्कृष्ट होता है।
- सर्वप्रथम जर्मन संस्कृत विद् **मैक्समूलर** ने 1853 ई. में आर्य शब्द का प्रयोग एक श्रेष्ठ जाति के आशय से किया था। आर्यों की भाषा संस्कृत थी। भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है, जो हिन्द-यूरोपीय भाषाओं का सबसे पुराना ग्रन्थ है। इसमें आर्य शब्द का 36 बार उल्लेख है। इराक से प्राप्त 1600 ई. पू. के **कस्साइट अभिलेख** तथा सीरिया से प्राप्त 1400 ई. पू. के **मितन्नी अभिलेख में** आर्य नामों का उल्लेख मिलता है, जिससे पश्चिम एशिया में आर्य भाषा-भाषियों की उपस्थिति का पता चलता है।
- आर्यों के मूल निवास स्थान के सन्दर्भ में विद्वानों के बीच मतभेद हैं। सर्वाधिक मान्य मत के अनुसार, आर्यों का मूल निवास आल्पस पर्वत के पूर्वी क्षेत्र (यूरेशिया) में था।

आर्यों के मूल स्थान सम्बन्धी विभिन्न मत

विद्वान्	मूल स्थान
प्रो. मैक्समूलर	मध्य एशिया *(बैक्ट्रिया)*
बालगंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
डॉ. अविनाशचन्द्र दास	सप्तसैन्धव प्रदेश
दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
नेहरिंग एवं प्रो. गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
गाइल्स महोदय	हंगरी तथा डेन्यूब नदी की घाटी

- 1400 ई. पू. के बोगजकोई (एशिया माइनर) के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं (इन्द्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य) का उल्लेख मिलता है। इससे अनुमानित होता है, कि वैदिक आर्य ईरान से होकर भारत में आए होंगे।
- अध्ययन की सुविधा के लिए वैदिक संस्कृति को दो भागों में बाँटा गया है—ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई. पू.) एवं उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

ऋग्वैदिक काल

- इस काल की जानकारी का एकमात्र स्रोत ऋग्वेद है। ऋग्वैदिक काल में आर्यों का जीवन कबीलाई प्रकार का था, जहाँ उनका जीवन अस्थायी प्रकार का होता था एवं युद्धों की प्रधानता थी।

भौगोलिक विस्तार

- ऋग्वेद में सप्त सैन्धव प्रदेश का वर्णन मिलता है। यह सात नदियाँ-सिन्धु, (सुवासा), सतलज (शतुद्रि), व्यास (विपाशा), रावी (परुष्णी), चेनाब (अस्किनी), झेलम (वितस्ता) तथा घग्घट (सुषामा) से घिरा क्षेत्र था। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियाँ—कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) और सुवस्तु (स्वात) का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि आर्य सर्वप्रथम पंजाब और अफगानिस्तान क्षेत्र में बसे थे।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है, जिसमें सिन्धु नदी का सर्वाधिक उल्लेख है। ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे पवित्र नदी **सरस्वती** थी, जिसे मातेतमा, देवीतमा एवं नदीतमा कहा गया है। नदी सूक्त में विपाशा (व्यास) नदी का उल्लेख नहीं है। ऋग्वेद में चार समुद्रों का उल्लेख है। सम्भवत: समुद्र किसी जलराशि का वाचक था। ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख हुआ है। मरुस्थल के लिए धन्व शब्द का उपयोग किया गया है। ऋग्वेद में हिमालय पर्वत एवं इसकी एक चोटी मुजवंत का भी उल्लेख है।

ऋग्वैदिक पुरातात्त्विक साक्ष्य मुख्यत: तीन प्रकार के हैं—काले एवं लाल मृद्भाण्ड (Black and Red Ware), ताम्र पुंज (Copper Hoards) तथा गेरुवर्णी मृद्भाण्ड (Ochre Coloured Pottery)।

राजनीतिक स्थिति

- ऋग्वैदिक प्रशासन मुख्यत: एक कबीलाई व्यवस्था वाला शासन था, जिसमें सैनिक भावना प्रमुख थी। सबसे छोटी इकाई कुल (परिवार) थी, जिसका प्रधान कुलप होता था ग्राम, विश और जन ये उच्चतर इकाई थे। ग्राम सम्भवत: कई परिवारों के समूह को कहते थे। ग्रामणी ग्राम का प्रधान होता था।
- 'विश' कई ग्रामों का समूह था। इसका प्रधान **विशपति** कहलाता था। अनेक विशों का समूह **जन** होता था। जन के अधिपति को 'जनपति' या 'राजा' कहा जाता था। ऋग्वेद में 'जन' शब्द का उल्लेख 275 बार मिलता है, जबकि 'जनपद' शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं मिलता है।
- जनों के प्रधान को **राजन** कहा जाता था। राजा के चुनाव में **समिति** का महत्त्वपूर्ण योगदान था। राजा को जनस्यगोपा, पुरभेत्ता, विशपति, गणपति, गोपति कहा जाता था। राजा की सहायता हेतु पुरोहित, सेनानी एवं ग्रामीण नामक प्रमुख अधिकारी थे। इनमें सबसे प्रमुख पुरोहित था।
- ऋग्वेद में सभा (आठ बार), समिति (नौ बार), विदथ (122 बार) तथा गण जैसी संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद की सबसे प्राचीन संस्था विदथ थी। **सभा** मुख्य रूप से वृद्ध जनों एवं कुलीन व्यक्तियों की संस्था थी। इसके सदस्यों को **सुजान** कहा जाता था। **समिति** कबीलों की आम सभा थी, जिसके प्रमुख को **ईशान** कहा जाता था। स्त्रियाँ केवल सभा में ही भाग ले सकती थीं। **विदथ** में लूटी गई वस्तुओं का बँटवारा होता था।
- **बलि** प्रजा द्वारा राजा को स्वेच्छा से दिया जाने वाला उपहार था। राजा इसके बदले उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लेता था। राजा नियमित या स्थायी सेना नहीं रखता था। व्रात, गण, ग्राम और सर्ध नाम से कबायली टोलियाँ लड़ाई लड़ती थीं।
- दशराज्ञ युद्ध परुष्णी (रावी) नदी के तट पर भरत वंश के राजा सुदास तथा दस अन्य जर्नी (पाँच आर्य एवं अनु अनार्य) के बीच हुआ था। पाँच आर्य कबीले—पुरु, यदु, तुर्वस, द्रुहु एवं अनु तथा पाँच अनार्य कबीले-अकीन्न, पक्थ, भलानश, विषाणी एवं शिवि थे। इसमें सुदास की विजय हुई थी।
- सुदास के मुख्य पुरोहित वशिष्ठ थे, जबकि दस राजाओं के संघ के पुरोहित विश्वामित्र थे। ऋग्वेद के सातवें मण्डल में इस युद्ध का उल्लेख हुआ है।

सामाजिक स्थिति

- ऋग्वैदिक समाज के संगठन का आधार गोत्र था, जो प्रत्येक व्यक्ति की पहचान का आधार था। समाज पितृसत्तात्मक था। संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी। नाना, दादा, नाती, पोते, आदि सभी के लिए एक ही शब्द **नप्तृ** का प्रयोग होता था। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में वर्णित **पुरुष सूक्त** में चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। इसमें कहा गया है कि ब्राह्मण परम-पुरुष के मुख से, क्षत्रिय उसकी भुजाओं से, वैश्य उसकी जाँघों से एवं शूद्र उसके पैरों से उत्पन्न हुआ है। इस काल में व्यवसाय के आधार पर ही समाज का विभेद प्रारम्भ हुआ।
- ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं-कहीं व्यवसाय चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रारम्भ में हमें तीन वर्णों का उल्लेख मिलता है—"ब्रह्म, क्षत्र, विश। शूद्र शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में मिलता है। ऋग्वेद में दास प्रथा का उल्लेख भी मिलता है।"

स्त्रियों की दशा

- ऋग्वैदिक समाज में स्त्रियों की दशा काफी अच्छी थी। कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था। स्त्रियों में पुनर्विवाह, नियोग प्रथा एवं बहुपति विवाह का प्रचलन था। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार था। लोपामुद्रा, घोषा, सिक्ता, विश्ववारा, अपाला आदि विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद की बहुत-सी ऋचाओं की रचना की है। पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्याओं को **अमाजू** कहा जाता था। ऋग्वेद में 'पत्नी ही गृह है, (जायदस्तम) कहकर उसके महत्त्व की व्याख्या की गई है।
- विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता था। *समाज में दो प्रकार के विवाह प्रचलित थे*
  1. अनुलोम विवाह उच्च वर्ण का पुरुष और निम्न वर्ण की स्त्री।
  2. प्रतिलोम विवाह उच्च वर्ण की स्त्री और निम्न वर्ण का पुरुष।
- *ऋग्वैदिक काल में तीन प्रकार के वस्त्र प्रचलित थे*— **नीवी** (अधोवस्त्र) शरीर के निचले हिस्से में पहना जाने वाला वस्त्र; **वासस** (उत्तरीय) शरीर के मध्य भाग में पहना जाने वाला वस्त्र तथा **अधिवासस** (द्रापि) शरीर के ऊपर ढँका जाने वाला वस्त्र।

आर्थिक स्थिति

- ऋग्वैदिक आर्यों का प्रारम्भिक जीवन अस्थायी था। इनकी संस्कृति मूलत: ग्रामीण थी। कबायली संरचना के अनुकूल पशुपालन मुख्य पेशा तथा कृषि गौण पेशा था। पशुओं में गाय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी, जिसका ऋग्वेद में 176 बार उल्लेख मिलता है।
- आर्यों की अधिकांश लड़ाइयाँ गायों को लेकर हुईं। ऋग्वेद में युद्ध का पर्याय **गविष्टि** (गायों का अन्वेषण) है। गवेषण, गोषु, गेसू, गव्य आदि सभी शब्द युद्ध के लिए प्रयुक्त होते थे। धनी व्यक्ति को **गोमत** तथा राजा को **गोपति** कहा जाता था। समय की माप के लिए **गोधूलि** तथा दूरी की माप के लिए **गवयतु** शब्द का प्रयोग किया गया है। **पणि** नामक व्यापारी पशुओं की चोरी करने के लिए कुख्यात थे। ऋग्वेद में घोड़ा, बैल, भैंस, भैंसा, भेड़, बकरी, ऊँट, तथा सरामा नामक एक पवित्र कुतिया का उल्लेख है। बाघ और हाथी का उल्लेख नहीं है।
- ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में खेती प्रक्रिया का वर्णन मिलता है। एक ही अनाज **यव अथवा जौ** का उल्लेख है। ऋग्वैदिक आर्यों को पाँच ऋतुओं का ज्ञान था।
- ऋग्वेद में कृषि सम्बन्धी शब्द—उर्वरा (जुते हुए खेत), लांगल (हल), करिषु (गोबर खाद), अवट (कुआँ), सीता (हल के निशान) कीवाश (हलवाहा) पर्जन्य (बादल), कुल्या (नहर), खिल्य (चरागाह) आदि मिलते हैं।
- ऋग्वेद में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते हैं। बढ़ई के लिए तक्षण तथा धातुकर्मी के लिए कर्मार शब्द मिलता है। सोना के लिए **हिरण्य** शब्द मिलता है। ऋग्वेद में कपास का उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में ऋण देकर ब्याज लेने वाले को **बेकनाट** (सूदखोर) कहा जाता था।

धार्मिक स्थिति

- आर्य बहुदेववादी होते हुए भी एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। इस समय प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण कर उनकी पूजा की गई। यज्ञों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। वे मुख्य रूप से प्रकृति के पूजक थे।

प्रकृति के प्रतिनिधि के रूप में आर्यों के देवताओं की तीन श्रेणियाँ थीं

1. **आकाश के देवता** सूर्य, द्यौस, वरुण, मित्र, पूषन, विष्णु, सवितृ, आदित्य, उषा, अश्विन आदि।
2. **अन्तरिक्ष के देवता** इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु, पर्जन्य, आप: मातरिश्वन आदि।
3. **पृथ्वी के देवता** अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वती आदि।

- ऋग्वेद में **इन्द्र** का वर्णन सर्वाधिक प्रतापी एवं लोकप्रिय देवता के रूप में किया जाता है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। इन्द्र को **आर्यों का युद्ध नेता** तथा वर्षा, आँधी, तूफान का देवता माना जाता है।
- ऋग्वेद के 5वें मण्डल में अग्नि सूक्त है। ऋग्वेद में अग्नि की स्तुति में 200 सूक्त मिलते हैं। ये दूसरे सबसे महत्त्वपूर्ण देवता हैं। इस काल में अग्नि देवताओं तथा मनुष्यों के बीच मध्यस्थ था। इसके माध्यम से देवताओं को आहुतियाँ दी जाती थीं।
- तीसरा प्रमुख देवता वरुण था, जो जलनिधि का प्रतिनिधित्व करता है। वरुण को **ऋतस्य गोपा** कहा गया है।
- ऋग्वेद के 9वें मण्डल में सोम की स्तुति है। सोम को पेय पदार्थ का देवता माना जाता है। द्यौस को ऋग्वैदिक कालीन देवों में सबसे प्राचीन माना जाता है।

ऋग्वैदिक देवता

मरुत	आँधी-तूफान के देवता
पर्जन्य	वर्षा के देवता
सरस्वती	नदी देवी *(बाद में विद्या की देवी)*
पूषन	पशुओं के देवता *(उत्तरवैदिक काल में शूद्रों के देवता)*
अरण्यानी	जंगल की देवी
यम	मृत्यु के देवता
मित्र	शपथ एवं प्रतिज्ञा के देवता
अश्विन	चिकित्सा के देवता

- **गायत्री मन्त्र** ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में उल्लेखित है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं। यह **सूर्य देवता** को समर्पित है। देवताओं की उपासना की मुख्य रीति स्तुतिपाठ करना तथा यज्ञ बलि अर्पित करना था। स्तुति पाठ पर अधिक जोर था।
- ऋग्वैदिक कालीन लोगों की उपासना करते थे। उपासना का दृष्टिकोण भौतिकवादी था। पुनर्जन्म की अवधारणा नहीं थी। यज्ञ की तुलना में प्रार्थना ही अधिक प्रचलित थी।

उत्तर वैदिक काल

- इस काल के अध्ययन के लिए सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ उपयोग है। उत्तरवैदिक काल में आर्यों के जीवन में स्थायित्व आया। कृषि का महत्त्व व्यापक रूप से बढ़ा तथा विंध्याचल के उत्तर के सम्पूर्ण क्षेत्र में पहुँचने में सफल हुए।

भौगोलिक विस्तार

- उत्तरवैदिक काल में आर्यों के प्रसार का वर्णन **शतपथ ब्राह्मण** के विदेह माधव की कथा में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में रेवा (नर्मदा नदी) का उल्लेख है। उत्तरवैदिक साहित्य में त्रिकबुद, कौच्च, मैनाक आदि पर्वतों का उल्लेख है, जो पूर्वी हिमालय में पड़ते हैं।
- ऋग्वैदिक आर्यों ने ब्रह्मवर्त्त से आगे बढ़कर गंगा-यमुना दोआब तथा उसके निकट के क्षेत्र पर अधिकार करके उसका नाम ब्रह्मर्षि देश रखा। तत्पश्चात् हिमालय और विंध्याचल के मध्य क्षेत्र पर अधिकार करके उसका नाम मध्य देश रखा। कालान्तर में सम्पूर्ण उत्तरी भारत उनके अधिकार में आ गया, जिसका नाम उन्होंने **आर्यावर्त्त** रखा।

राजनीतिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में पहली बार क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ पुरु एवं भरत कबीला मिलकर कुरु तथा तुर्वस एवं क्रीवी मिलकर पांचाल कहलाए। प्रारम्भिक कुरुओं की राजधानी आसन्दीवत् थी, जिसके अन्तर्गत कुरुक्षेत्र (सरस्वती एवं दृषद्वती के बीच की भूमि) सम्मिलित था। बाद में हस्तिनापुर उसकी राजधानी हो गई।
- पांचालों की राजधानी **काम्पिल्य** थी। पांचालों के प्रसिद्ध शासक प्रवाहण जैवालि विद्वानों के संरक्षक थे। शतपथ ब्राह्मण में पांचाल को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है। उत्तरवैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था।
- उत्तरवैदिक काल में छोटे-छोटे जन मिलकर जनपद में परिवर्तित हो गए। इसी समय **राष्ट्र** शब्द का प्रयोग भी पहली बार हुआ। राजा की उत्पत्ति का सिद्धान्त सर्वप्रथम **ऐतरेय ब्राह्मण** में मिलता है। अधिकारों में वृद्धि के परिणामस्वरूप अलग-अलग दिशाओं के राजा के नाम अलग-अलग होने लगे।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार राजा

क्षेत्र	राज्य का नाम	राजा का नाम
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य देश	राज्य	राजा

- राजा का राज्याभिषेक राजसूय यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता था, जिसका विस्तृत वर्णन शतपथ ब्राह्मण से मिलता है, राजा की सहायता के लिए उच्च कोटि के अधिकारी थे, जिन्हें रत्निन कहा गया है। ये कान में रत्न धारण करते थे।
- शतपथ ब्राह्मण में 12 रत्निनों का उल्लेख है।—पुरोहित (धार्मिक कार्य करना); सेनानी (सेनापति); सूत (राजा का सारथी); ग्रामणी (ग्राम का प्रधान); भागदुध (कर संग्रहकर्ता); संगृहित्री (कोषाध्यक्ष), अक्षवाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी), रथकार (रथ निर्माण करने वाला), गोविकर्त्तन (जंगल विभाग का प्रधान), महिषी (मुख्य रानी), पालागल (विदूषक, दूत, मित्र), एवं युवराज (राजकुमार)।
- सबसे प्राचीन संस्था विदथ उत्तरवैदिक काल में समाप्त हो गई। राजा पर सभा और समिति का नियन्त्रण समाप्त हो गया। **अथर्ववेद** में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। उत्तरवैदिक काल में राजतन्त्र ही शासन का आधार था। कहीं-कहीं गणतन्त्र के उदाहरण भी मिलते हैं। स्थायी सेना नहीं होती थी।
- सूत एवं ग्रामीण को कर्तृ (राजा बनाने वाला) कहा गया है। राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था। ब्राह्मण को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था। उत्तरवैदिक काल में राजा अपनी प्रजा से नियमित कर वसूलने लगा, जिसे बलि, शुल्क या भाग कहा जाता था। इसकी मात्रा 1/16 भाग थी।

सामाजिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था का आधार **वर्णाश्रम व्यवस्था** ही था, यद्यपि वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी थी। समाज में चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। ब्राह्मण के लिए **ऐहि**, क्षत्रिय के लिए **आगच्छ,** वैश्य के लिए **आद्रव** तथा शूद्र के लिए **आधव** शब्द प्रयुक्त होते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य इन तीनों को **द्विज** कहा जाता था। ये उपनयन संस्कार के अधिकारी थे। चौथा वर्ण (शूद्र) उपनयन संस्कार का अधिकारी नहीं था और यहीं से शूद्रों को अपात्र या आधारहीन मानने की प्रक्रिया शुरू हो गई।
- यज्ञ का अनुष्ठान बढ़ जाने के कारण ब्राह्मणों की शक्ति में अपार वृद्धि हुई। ब्राह्मण लोग अपने यजमानों के लिए तथा अपने लिए धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ करते थे। इन्हें अदायी (दान लेने वाला) और सोमपाई (भ्रमण करने वाला) कहा गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्त्तव्यों का वर्णन मिलता है। इस काल में केवल वैश्य ही कर चुकाते थे। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनों वैश्यों से वसूले राजस्व पर जीते थे। शूद्र का कार्य अन्य वर्गों की सेवा करना था। समाज में रथकार का स्थान ऊँचा था, जिसका उपनयन संस्कार किया जाता था।
- ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को सभी दु:खों का स्रोत तथा पुत्र को परिवार का रक्षक बताया गया है।
- उत्तरवैदिक काल में आश्रम व्यवस्था स्थापित हुई। में केवल तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ) की जानकारी मिलती है, चौथे आश्रम संन्यास की अभी स्पष्ट स्थापना नहीं हुई थी।
- सर्वप्रथम **जाबालोपनिषद्** में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है। उत्तरवैदिक काल के आर्यों को चावल, नमक, मछली, हाथी तथा बाघ आदि का ज्ञान हो गया, जो ऋग्वैदिक काल में अज्ञात था।

आर्थिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य पेशा हो गया। लोहे के उपकरणों के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में क्रान्ति आ गई। यजुर्वेद में लोहे के लिए श्याम अयस एवं कृष्ण अयस शब्द का प्रयोग हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चार क्रियाओं-जुताई, बुआई, कटाई और मड़ाई का उल्लेख हुआ है। पशुपालन गौण पेशा हो गया।
- अथर्ववेद में सिंचाई के साधन के रूप में वर्णाकूप एवं नहर (कुल्या) का उल्लेख मिलता है। हल की नाली को सीता कहा जाता था। अथर्ववेद के विवरण के अनुसार, सर्वप्रथम पृथ्वीवेन ने हल और कृषि को जन्म दिया।
- इस काल की मुख्य फसल धान और गेहूँ हो गईं। यजुर्वेद में ब्रीहि (धान), यव (जौ), माण (उड़द) मुद्ग (मूँग), गोधूम (गेहूँ), मसूर आदि अनाजों का वर्णन मिलता है। अथर्ववेद में सर्वप्रथम नहरों का उल्लेख हुआ है।
- इस काल में हाथी को पालतू बनाए जाने के साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं, जिसके लिए हस्ति या वारण शब्द मिलता है।
- वृहदारण्यक उपनिषद् में श्रेष्ठिन शब्द तथा ऐतरेय ब्राह्मण में श्रेष्ठय शब्द से व्यापारियों की श्रेणी का अनुमान लगाया जाता है। तैत्तरीय संहिता में ऋण के लिए **कुसीद** शब्द मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का पहली बार जिक्र हुआ है तथा सूदखोर को **कुसीदिन** कहा गया है। निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल आदि माप की विभिन्न इकाइयाँ थीं। द्रोण अनाज मापने के लिए प्रयुक्त किए जाते थे।
- उत्तरवैदिक काल के लोग चार प्रकार के मृद्भाण्डों से परिचित थे—काला व लाल मृद्भाण्ड, काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड, चित्रित धूसर मृद्भाण्ड और लाल मृद्भाण्ड।
- उत्तरवैदिक आर्यों को समुद्र का ज्ञान हो गया था। इस काल के साहित्य में पश्चिमी और पूर्वी दोनों प्रकार के समुद्रों का वर्णन है। वैदिक ग्रन्थों में समुद्र यात्रा की भी चर्चा है, जिससे वाणिज्य एवं व्यापार का संकेत मिलता है। सिक्कों का अभी नियमित प्रचलन नहीं हुआ था।

© उत्तरवैदिक ग्रन्थों में कपास का उल्लेख नहीं हुआ है, बल्कि ऊनी (ऊन) शब्द का प्रयोग कई बार आया है। बुनाई का काम प्राय: स्त्रियाँ करती थीं। कढ़ाई करने वाली स्त्रियों की पेशस्करी कहा जाता था।

© तैत्तरीय अरण्यक में पहली बार नगर की चर्चा हुई है। उत्तरवैदिक काल के अन्त में हम केवल नगरों का आभास पाते हैं।

© हस्तिनापुर और कौशाम्बी प्रारम्भिक नगर थे, जिन्हें आद्य नगरीय स्थल (Proto-Urban Site) कहा जा सकता है।

धार्मिक स्थिति

- धर्म एवं ऋतु की संकल्पना उत्तरवैदिक काल की प्रमुख संकल्पना है। धर्म से आशय व्यक्ति के स्वयं तथा समाज के प्रतिकर्त्तव्य थे, जबकि ऋतु सार्वभौगिक विधान थी, जो सृष्टि का नियामक था।
- उत्तरवैदिक आर्यों के धार्मिक जीवन में मुख्यत: तीन परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं—देवताओं की महत्ता में परिवर्तन, अराधना की रीति में परिवर्तन तथा धार्मिक उद्देश्यों में परिवर्तन।
- उत्तरवैदिक काल में इन्द्र के स्थान पर सृजन के देवता **प्रजापति** को सर्वोच्च स्थान मिला। रुद्र और विष्णु दो अन्य प्रमुख देवता इस काल के माने जाते हैं। वरुण मात्र जल के देवता माने जाने लगे, जबकि पूषन अब शूद्रों के देवता हो गए।
- इस काल में प्रत्येक वेद के अपने पुरोहित हो गए। ऋग्वेद का पुरोहित होता, सामवेद का उद्गाता, यजुर्वेद का अध्वर्यु एवं अथर्ववेद का ब्रह्मा कहलाता था। उत्तरवैदिक काल में अनेक प्रकार के यज्ञ प्रचलित थे, जिनमें सोमयज्ञ या अग्निष्टोम यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, वाजपेय यज्ञ एवं राजसूय यज्ञ महत्त्वपूर्ण थे।
- मृत्यु की चर्चा सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण तथा मोक्ष की चर्चा सर्वप्रथम उपनिषद् में मिलती है। पुनर्जन्म की अवधारणा वृहदराण्यक उपनिषद् में मिलती है। निष्काम कर्म के सिद्धान्त का प्रतिपादन सर्वप्रथम ईशोपनिषद् में किया गया है।

प्रमुख यज्ञ

अग्निष्टोम यज्ञ पापों के क्षय और स्वर्ग की ओर ले जाने वाले नाव के रूप में वर्णित।

सोत्रामणि यज्ञ यज्ञ में पशु एवं सुरा की आहुति।

पुरुषमेध यज्ञ पुरुषों की बलि, सर्वाधिक 25 यूपों (यज्ञ स्तम्भ) का निर्माण।

अश्वमेध यज्ञ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यज्ञ, राजा द्वारा साम्राज्य की सीमा में वृद्धि के लिए, साँडों तथा घोड़ों की बलि।

राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक से सम्बन्धित।

वाजपेय यज्ञ राजा द्वारा अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए, रथदौड़ का आयोजन।

वैदिक साहित्य

वेद

- वेद का अर्थ है- जानना अथवा ज्ञान। वेदों के संकलनकर्ता कृष्णद्वैपायन वेदव्यास को माना गया है। वेदों को अपौरुषेय अर्थात् दैवकृत भी माना जाता है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद, इन चारों वेदों को संहिता कहा जाता है। इनमें वेदों के सम्मिलित संग्रह को वेदत्रयी कहा जाता है।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद विश्व का प्रथम प्रमाणिक ग्रन्थ है। यह देवताओं को स्तुति से सम्बन्धित रचनाओं का संग्रह है। ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त है। इसमें 2 से 7 तक के मण्डल प्राचीनतम माने जाते हैं। प्रथम एवं दशम मण्डल बाद में जोड़े गए हैं। इसमें कुल **1028 सूक्त** हैं। इसकी भाषा पद्यात्मक है।
- ऋग्वेद की अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ अवेस्ता में मिलती हैं। प्रसिद्ध वाक्य **असतो मा सद्गमय** ऋग्वेद से लिया गया है। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में है। ऋग्वेद के दूसरे से आठवें मण्डल की रचना क्रमश: गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ तथा कण्व व अंगिरा ने की है।

यजुर्वेद

- यजुर्वेद यजुष शब्द का अर्थ है यज्ञ। यजुर्वेद के मन्त्रों का उच्चारण अध्वुर्य नामक पुरोहित करता था। इस वेद में अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का उल्लेख है। यह गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है। यजुर्वेद के दो मुख्य भाग हैं—कृष्ण यजुर्वेद एवं शुक्ल यजुर्वेद। इसमें पहली बार राजसूय तथा वाजपेय जैसे दो राजकीय समाराहों का उल्लेख है। **शुक्ल यजुर्वेद** को वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है।

सामवेद

- सामवेद साम शब्द का अर्थ है गान। सामवेद में संकलित मन्त्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता था। सामवेद में कुल 1875 रचनाएँ हैं, जिनमें से 75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से ली गई हैं। इन रचनाओं का गान सोमयज्ञ के समय उद्गाता करते थे। **भारतीय संगीत** के विकास में सामवेद का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

अथर्ववेद

- अथर्ववेद की रचना अथर्वा ऋषि द्वारा की गई है। अत: अथर्वा ऋषि के नाम पर ही इसे अथर्ववेद कहते हैं। इस वेद में कुल 20 मण्डल, 731 सूक्त एवं 5839 मन्त्र हैं। इस वेद के महत्त्वपूर्ण विषय हैं—ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, तन्त्र-मन्त्र, टोना-टोटका आदि। इसे ब्रह्मवेद, भैषज्यवेद एवं महीवेद के नाम से भी जाना जाता है।

वैदिक साहित्य

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषितकी ब्राह्मण	ऐतरेयोपनिषद्, कौषितकी उपनिषद्	आयुर्वेद
यजुर्वेद			धनुर्वेद
(i) शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण	ईशोपनिषद्, वृहदारण्य कोपनिषद्	
(ii) कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तरीय ब्राह्मण	कठोपनिषद्, मैत्रायणी उपनिषद् श्वेताश्वतरोपनिषद्	
सामवेद	पंचविश, षड्विश एवं जैमिनीय ब्राह्मण	छान्दोग्योपनिषद् कैनोपनिषद्	गन्धर्ववेद
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डुक्योपनिषद्	शिल्पवेद

ब्राह्मण ग्रन्थ

- यज्ञों एवं कर्मकाण्डों के विधान एवं इनकी क्रियाओं को भली-भाँति समझने के लिए नवीन ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना हुई। यज्ञ के विषयों का अच्छी तरह से प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ ही ब्राह्मण ग्रन्थ कहे गए। ब्राह्मण ग्रन्थों में वैदिक संहिताओं की गद्यात्मक व्याख्या है।

आरण्यक

- आरण्यकों में दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों; जैसे—आत्मा, मृत्यु, जीवन आदि का वर्णन है। इन ग्रन्थों को आरण्यक इसलिए कहा गया है, क्योंकि इन ग्रन्थों को आरण्यक अर्थात् वन में पढ़ा जाता था। अथर्ववेद का कोई **आरण्यक ग्रन्थ** नहीं है।

प्रमुख दर्शन एवं प्रवर्तक

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल (सांख्य कारिका)
योग	पतंजलि *(योगसूत्र)*
न्याय	गौतम *(न्यायसूत्र)*
वैशेषिक	कणाद या उलूक
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण *(ब्रह्मसूत्र)*

उपनिषद्

- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है—समीप बैठना अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरु के समीप बैठना। इस प्रकार उपनिषद् एक ऐसा रहस्य ज्ञान है, जिसे गुरु के सहयोग से ही समझा जा सकता है।
- उपनिषद् वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग हैं, इसलिए इन्हें **वेदान्त** भी कहा जाता है। इनकी कुल संख्या 108 है। प्रमुख 12 उपनिषद् हैं। भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्शवाक्य **सत्यमेव जयते** मुण्डकोपनिषद् से ही तथा **तत् त्वं असि** नामक दार्शनिक अवधारणा **छान्दोग्य उपनिषद्** से ली गई है। अध्यात्म ज्ञान के सम्बन्ध में नचिकेता एवं यम संवाद कठोपनिषद् से लिया गया है। उपनिषद् प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का संग्रह है।

वेदांग

- वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने में वेदांग सहायक होते हैं। इसमें कम शब्दों में अधिक तथ्य रखने का प्रयास किया गया है। *वेदांगों की संख्या छः है* — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था **[IAS 2012]**

(a) भक्ति *(b)* मूर्तिपूजा व यज्ञ
(c) प्रकृति पूजा व यज्ञ *(d)* प्रकृति पूजा व भक्ति

2. 'आर्य' शब्द इंगित करता है **[IAS 1999]**

(a) नृजाति समूह को *(b)* यायावरी जन को
(c) भाषा समूह को *(d)* श्रेष्ठ वंश को

3. सुमेलित कीजिए

सूची I (वैदिक नदियाँ)	**सूची II** (आधुनिक नाम)
A. कुभा	1. गण्डक
B. परुष्णी	2. काबुल
C. सदानीरा	3. रावी
D. सुतुद्री	4. सतलज

कूट

	A	B	C	D
(a)	1	2	4	3
(c)	3	4	2	1

	A	B	C	D
(b)	2	3	1	4
(d)	4	1	3	2

4. प्राचीन भारतीय समाज के प्रसंग में, निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द तीन के वर्ग का नहीं है?

(a) कुल *(b)* वंश
(c) कोश *(d)* गोत्र

5. अध्यात्म ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम का संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?

(a) वृहदारण्यक उपनिषद् में *(b)* छान्दोग्य उपनिषद् में
(c) कठोपनिषद् में *(d)* केन उपनिषद् में

6. उपनिषद् पुस्तकें हैं

(a) धर्म पर *(b)* योग पर
(c) विधि पर *(d)* दर्शन पर

7. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है? **[JPSC 2011]**

(a) ऋग्वेद *(b)* यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद *(d)* सामवेद

8. सुमेलित कीजिए **[UPPCS 2003]**

सूची I	**सूची II**
A. ऋग्वेद	1. संगीतमय स्रोत
B. यजुर्वेद	2. स्रोत एवं कर्मकाण्ड
C. सामवेद	3. तन्त्र–मन्त्र एवं वशीकरण
D. अथर्ववेद	4. स्रोत एवं प्रार्थनाएँ

कूट

	A	B	C	D
(a)	4	2	1	3
(c)	4	1	2	3

	A	B	C	D
(b)	3	2	4	1
(d)	2	3	1	4

9. निम्नलिखित अभिलेखों में से कौन-सा ईरान से भारत में आर्यों के आने की सूचना देता है? **[UPPCS 2009]**

(a) मान सेहरा *(b)* शहबाजगढ़ी
(c) बोगजकोई *(d)* जूनागढ़

10. 'धर्म' तथा 'ऋतु' भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केन्द्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस सन्दर्भ में निम्लिखित कथनों पर विचार कीजिए **[IAS 2011]**

1. धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्त्तव्यों की संकल्पना थी।
2. ऋत मूलभूत नैतिक विधान था, जो सृष्टि और उसमें अन्तर्निहित सारे तत्त्वों के क्रियाकलापों को संचालित करता था।

उपरोक्त कथनों में कौन-सा/ से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 *(b)* केवल 2
(c) 1और 2 *(d)* न तो 1 और न ही 2

11. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रथा-चतुष्टय वेदोत्तर काल में प्रचलित हुई?

(a) धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष
(b) ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र
(c) ब्रह्मचर्य-गृहस्था-वानप्रस्थ-संन्यास
(d) इन्द्र-सूर्य-रुद्र-मरुत

12. आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है

(a) सिन्धु *(b)* शुतुद्री
(c) सरस्वती *(d)* गंगा

13. ऋग्वेद में ··· रचनाएँ हैं। **[Csg PCS 2011]**

(a) 1028 *(b)* 1017 *(c)* 1048 *(d)* 1020

14. गोत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम हुआ था **[UPPCS 2005]**

(a) अथर्ववेद में *(b)* ऋग्वेद में
(c) सामवेद में *(d)* यजुर्वेद में

15. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. गोपथ यजुर्वेद का एक ब्राह्मण है।
2. शिल्प वेद अथर्वेद का एक उपवेद है।

कूट

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2
(d) न तो 1 और न ही 2

1. (c) **2.** (d) **3.** (b) **4.** (c) **5.** (c) **6.** (d) **7.** (c) **8.** (a) **9.** (c) **10.** (c)
11. (c) **12.** (a) **13.** (a) **14.** (b) **15.** (b)

अध्याय चार
मगध का उत्कर्ष एवं प्रारम्भिक विदेशी आक्रमण

''छठी शताब्दी ई.पू. के आस-पास आर्थिक क्षेत्र में तेजी से बदलाव हुए, जिसके कारण राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों ने एक ओर जहाँ राजनीतिक क्षेत्र में साम्राज्यों की स्थापना को सुनिश्चित किया वहीं दूसरी ओर सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त किया।''

महाजनपदों का उदय

- छठी शताब्दी ई. पू. के आस-पास कृषि में नवीन तकनीक तथा लोहे के प्रयोग के कारण अधिशेष उत्पादन होने लगा। कृषि अधिशेष से व्यापार एवं वाणिज्य को बल मिला, जिससे **दूसरी नगरीय क्रान्ति** आई। इस कारण उत्तर वैदिक काल के जनपद, महाजनपदों में परिवर्तित हो गए।
- महाजनपदों की कुल संख्या **16** थी, जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ **अंगुत्तर निकाय**, **महावस्तु** एवं जैन ग्रन्थ **भगवती सूत्र** में मिलता है। इसमें मगध, कोसल, वत्स और अवन्ति सर्वाधिक शक्तिशाली थे।

महाजनपद एवं उनकी राजधानी

महाजनपद	राजधानी	महाजनपद	राजधानी
मगध	राजगृह	वत्स	कौशाम्बी
अवन्ति	उज्जयिनी/ महिष्मती	कुरु	हस्तिनापुर
वज्जि	वैशाली	मत्स्य	विराटनगर
कोसल	श्रावस्ती	पांचाल	अहिच्छत्र/ काम्पिल्य
काशी	वाराणसी	सूरसेन	मथुरा
अंग	चम्पा	गान्धार	तक्षशिला
मल्ल	कुशीनारा	कम्बोज	राजपुरा
चेदि	सोथीवती	अश्मक	पोतन

- मल्ल महाजनपद के दो भाग थे- एक की राजधानी कुशीनगर एवं दूसरे की पावा थी। कुशीनगर में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ, जबकि पावा में महावीर को।
- वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी थी। हस्तिनापुर के बाढ़ में नष्ट हो जाने पर राजा निचक्षु ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। बुद्ध काल में उदयन यहाँ का प्रसिद्ध राजा था। अश्मक गोदावरी नदी के तट पर स्थित महाजनपद था, जिसकी राजधानी पोतना अथवा पोटिल थी। महाजनपदों में केवल अश्मक ही नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित था।
- गान्धार महाजनपद की राजधानी तक्षशिला प्राचीन काल में विद्या एवं व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र थी। तक्षशिला झेलम तथा सिन्धु नदी के मध्य स्थित थी। पुष्कलावती यहाँ का प्रमुख नगर था।
- अश्वसेन काशी, कोख्य कुरू, विराट मत्स्य का, अवन्तिपुत्र सूरसेन, प्रसेनजित कोसल तथा चन्द्रवर्मन गांधार का प्रमुख शासक था।
- मगध, काशी, वज्जि, वत्स, सूरसेन, कोशल महाजनपदों का सम्बन्ध महात्मा बुद्ध के जीवन से था, जबकि अवन्ति महाजनपद के नरेश प्रद्योत द्वारा आमन्त्रित किए जाने के बाद भी बुद्ध अपनी वृद्धावस्था के कारण वहाँ नहीं जा सके थे।

मगध का उत्कर्ष

- महाजनपदों में मगध, वत्स, कोसल एवं अवन्ति अत्यन्त शक्तिशाली थे। इनमें मगध और अवन्ति ज्यादा महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। अन्ततः मगध ने अवन्ति पर भी अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर ली।
- विस्तृत उपजाऊ मैदान, कृषि में लोहे तथा नवीन तकनीक का प्रयोग, वन क्षेत्र एवं हाथियों की उपलब्धता, खनिज संसाधनों की उपलब्धता, व्यापार की अनुकूल दशा तथा प्राकृतिक सुरक्षा ने मगध के उत्कर्ष में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- योग्य शासकों एवं मन्त्रियों के योग्य नेतृत्व ने मगध के उद्भव की प्रक्रिया को आसान बना दिया। मगध पर क्रमशः हर्यंक वंश, शिशुनाग वंश एवं नन्द वंश ने शासन किया, तत्पश्चात् मौर्य वंश की स्थापना हुई थी।

हर्यंक वंश (544-412 ई.पू.)

- **बिम्बिसार** (544-492 ई. पू.) इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था। उसे श्रेणिक के नाम से जाना जाता था। बिम्बिसार ने अंग राज्य को जीतकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक नियुक्त किया। मगध राज्य की आरम्भिक राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) थी।
- उसकी प्रथम पत्नी कोशल देवी कोसल राज प्रसेनजित की बहन थी, दूसरी लिच्छवि राजकुमारी चेल्लना थी तथा तीसरी भद्रकुल के प्रधान की पुत्री क्षेमा थी। वैवाहिक सम्बन्धों के बदले कोसल से काशी का गाँव प्राप्त हुआ था।
- बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत के राज्य में चिकित्सार्थ भेजा था। बिम्बिसार बुद्ध का समकालीन तथा बौद्ध धर्मानुयायी था। उसने बौद्धों को वेलवन नामक वन दान में दिया था।
- **अजातशत्रु** (492-460 ई. पू.) अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके मगध का शासक बना, जो कुणिक नाम से जाना जाता था। उसने काशी तथा वज्जि संघ को एक लम्बे संघर्ष के बाद मगध साम्राज्य में मिला लिया। उसके मन्त्री वस्सकार द्वारा वैशाली के लिच्छवियों में फूट डालने के कारण ही अजातशुत्र के वज्जि संघ पर विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध में अजातशत्रु ने **रथमूसल** तथा **महाशिलाकण्टक** नामक नए हथियारों का प्रयोग किया।
- उसके शासन काल के आठवें वर्ष में बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ। बुद्ध के अवशेषों पर उसने राजगृह में स्तूप का निर्माण कराया। इसी के काल में राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया, जिसमें बुद्ध की शिक्षाओं को सुत्तपिटक तथा विनयपिटक के रूप में लिपिबद्ध किया गया।
- **उदयिन** (460-444 ई. पू.) अजातशत्रु की हत्या कर मगध का शासक बना। पुराणों एवं जैन ग्रन्थों के अनुसार, गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र (कुसुमपुरा) नामक नगर की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। उदयिन जैन धर्मावलम्बी था।

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

- **शिशुनाग** (412-394 ई. पू.) ने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिला लिया। उसे जनता द्वारा चयनित शासक माना जाता था। शिशुनाग ने वज्जियों के ऊपर कठोर नियन्त्रण रखने के लिए पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- **कालाशोक** (394-366 ई.पू.) का नाम पुराण तथा दिव्यावदान में काकवर्ण मिलता है। इसने वैशाली के स्थान पर पुन: पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। कालाशोक की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने 344 ई. पू. तक शासन किया। इस वंश का अन्तिम शासक नन्दिवर्द्धन (महानन्दिन) था।

गणतन्त्र

महाजनपद काल में कुछ गणतन्त्र भी मौजूद थे। इनमें लिच्छवी सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था। *प्रमुख गणतन्त्र निम्नलिखित थे*

- कपिल वस्तु के शाक्य
- अल्कप्प के बुलि
- रामग्राम के कोलिय
- कुशीनारा के मल्ल
- मिथिला के विदेह
- सुमसुमगिरि के भग्ग
- केशपुत्त के कलाम
- पावा के मल्ल
- पिप्लीवन के मोरिय
- वैशाली के लिच्छवी

नन्द वंश (344-322 ई.पू.)

- इस वंश का संस्थापक **महापद्मनन्द** एक शूद्र शासक था पुराणों में महापद्मनन्द को **सर्वक्षत्रान्तक** (क्षत्रियों का नाश करने वाला) तथा भार्गव (परशुराम का अवतार) कहा गया है। एक विशाल साम्राज्य स्थापित कर उसने एकराट एक एकच्छत्र की उपाधि धारण की।
- महापद्मनन्द के आठ पुत्रों में **धनानन्द** सिकन्दर का समकालीन था। ग्रीक (यूनानी) लेखकों में इसे **अग्रमीज** कहा गया है। धनानन्द के समय 326 ई. पू. में सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था। 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से धनानन्द की हत्या कर मौर्यवंश के शासन की नींव डाली।

सूत्रकालीन सभ्यता

- छठी शताब्दी ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई. पू. का काल सूत्रकाल कहलाता है। सूत्र साहित्य की रचना वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा संक्षिप्त करने के लिए की गई है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र ग्रन्थ भाषा सम्बन्धी हैं। इस प्रकार के ग्रन्थों में यास्क का निरुक्त तथा पाणिनी की अष्टाध्यायी प्रमुख है। अष्टाध्यायी वेदोत्तर संस्कृत साहित्य की सबसे प्रारम्भिक रचना है। सूत्रकालीन सभ्यता की जानकारी सूत्र साहित्य से प्राप्त होती है।

सूत्र साहित्य

सूत्र साहित्य निम्नलिखित हैं

—**कल्प सूत्र** विधि एवं नियमों का प्रतिपादन।
—**श्रौत सूत्र** यज्ञ से सम्बन्धित विस्तृत विधि-विधानों की व्याख्या।
—**शुल्व सूत्र** यज्ञ स्थल तथा अग्निवेदी के निर्माण तथा माप से सम्बन्धित नियम हैं। इसमें भारतीय ज्यामिति का प्रारम्भिक रूप दिखाई देता है।
—**धर्म सूत्र** सामाजिक-धार्मिक कानून तथा आचार-संहिता है।
—**गृह सूत्र** मनुष्य के लौकिक एवं पारलौकिक कर्त्तव्य है।

- सूत्रकाल तक आते-आते वर्ण, जातियों में परिवर्तित हो गए। शूद्रों को समाज का अत्यन्त निकृष्ट तथा अधिकार विहीन वर्ग माना गया। उन्हें अध्ययन, यज्ञ, मन्त्रोचारण आदि का अधिकार नहीं था।
- सूत्र काल में अस्पृश्यता का उदय हुआ। चाण्डाल अस्पृश्य माने जाने लगे, जो नगर के बाहर निवास करते थे। इसकी उत्पत्ति प्रतिलोम विवाह के फलस्वरूप मानी गई। समाज में अनेक जातियों जैसी अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, मागध, वैदेहक, रथकार आदि का आविर्भाव, अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह के फलस्वरूप हुआ।
- वर्ण व्यवस्था के साथ-साथ सूत्रकाल में चारों प्रकार के आश्रमों तथा पुरुषार्थों का विधिवत् वर्णन मिलने लगता है। इसके साथ ही गृह्य सूत्र में सोलह प्रकार के संस्कार तथा आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है।

विवाह के प्रकार

- विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता था। गृह्य सूत्र में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन मिलता है, *जो निम्न हैं*

—**प्रजापत्य विवाह** वर-वधू जब धर्म का आचरण करते हुए विवाह करते हैं।

—**आर्ष विवाह** कन्या का पिता वर को कन्या प्रदान करने के बदले में एक जोड़ी गाय और बैल प्राप्त करता है।

—**दैव विवाह** जो पुरोहित यज्ञ का अनुष्ठान विधिपूर्वक करा लेता था, उसी के साथ कन्या का विवाह कर दिया जाता था।

—**ब्रह्म विवाह** इस विवाह को सर्वोत्तम माना गया है। इसमें लड़की का पिता वेदज्ञ एवं शीलवान वर ढूँढ़ता है।

—**गन्धर्व विवाह** यह प्रणय विवाह था। इसमें वर एवं कन्या एक-दूसरे से अनुरक्त होकर अपना विवाह कर लेते थे।

—**असुर विवाह** इसमें कन्या का पिता अथवा उसके सम्बन्धी धन लेकर कन्या का विवाह करते थे। यह एक प्रकार से कन्या की बिक्री था।

—**राक्षस विवाह** बलपूर्वक कन्या का अपहरण करके उसके साथ विवाह करना।

—**पैशाच विवाह** यह विवाह का निकृष्टतम प्रकार है। इसमें वर छल, छद्म के द्वारा कन्या के शरीर पर अधिकार कर लेता था।

संस्कार

- संस्कार का अर्थ है—परिष्कार या शुद्धिकरण। इसके माध्यम से व्यक्ति को समाज के एक योग्य नागरिक के रूप में तैयार किया जाता था। ये संस्कार जन्म पूर्व से लेकर मृत्युपर्यन्त चलते रहते थे। *गृह्य सूत्र में निम्न 16 प्रकार के संस्कारों की मान्यता है*

1. **गर्भाधान संस्कार** सन्तान उत्पन्न करने हेतु पुरुष एवं स्त्री द्वारा की जाने वाली क्रिया।
2. **पुंसवन संस्कार** पुत्र प्राप्ति के लिए मन्त्रोचारण।
3. **सीमन्तोनयन संस्कार** गर्भवती स्त्री के गर्भ की रक्षा हेतु किया जाने वाला संस्कार।
4. **जातकर्म संस्कार** बच्चे के जन्म के पश्चात् पिता अपने शिशु को घृत या मधु चटाता था। बच्चे के दीर्घायु के लिए प्रार्थना की जाता थी।
5. **नामकरण संस्कार** शिशु का नाम रखा जाता था।
6. **निष्क्रमण संस्कार** बच्चे के घर से पहली बार बाहर निकलने के अवसर पर किया जाता था।
7. **अन्नप्राशन संस्कार** इसमें शिशु को छठे माह में अन्न खिलाया जाता था।
8. **चूड़ाकर्म संस्कार** शिशु का तीसरे से आठवें वर्ष के बीच कभी भी मुण्डन कराया जाता था।
9. **कर्णवेधन संस्कार** रोगों से बचने हेतु तथा आभूषण धारण करने के उद्देश्य से किया जाता था।
10. **विद्यारम्भ संस्कार** पाँचवें वर्ष में बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता था।
11. **उपनयन संस्कार** इस संस्कार के पश्चात् बालक द्विज हो जाता था। बच्चा इसके बाद शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता था।
12. **वेदारम्भ संस्कार** वेद अध्ययन करने के लिए किया जाना वाला संस्कार।
13. **केशान्त संस्कार** 16 वर्ष का हो जाने पर प्रथम बार केशान्त (बाल काटना) किया जाता था।
14. **समावर्तन संस्कार** विद्याध्ययन समाप्त कर घर लौटने पर किया जाता था। यह ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति का सूचक था।
15. **विवाह संस्कार** वर-वधु के परिणय-सूत्र में बन्धन के समय किया जाने वाला संस्कार था।
16. **अन्त्येष्टि संस्कार** निधन के बाद होने वाला संस्कार।

आश्रम व्यवस्था

- प्राचीनकाल में शास्त्रकारों द्वारा जीवन की अवधि 100 वर्ष मानकर उसे चार भागों में बाँटा गया था। ये चार भाग चार आश्रम कहलाते थे। उत्तर वैदिक काल तक केवल तीन आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ ही अस्तित्व में थे। सूत्रकाल में इसमें एक और आश्रम संन्यास भी स्थापित हो गया।

ब्रह्मचर्य आश्रम

- यह जन्म से 25 वर्ष तक की आयु तक होता था। इसमें उपनयन के पश्चात् बालक विद्याध्ययन हेतू गुरुकुल जाता था। ब्रह्मचर्य आश्रम के दौरान बालक ब्रह्मचारी कहलाता था। *ब्रह्मचारी दो प्रकार के थे*

1. **उपकुर्वाण** जो विद्या अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे।
2. **नैष्ठिक** जो जीवन-पर्यन्त गुरु के पास ही रहते थे तथा ज्ञान अर्जन करते थे।

गृहस्थ आश्रम

- यह 25 से 50 वर्ष तक की आयु के मध्य होता था। इसके अन्तर्गत विवाह, सन्तानोत्पत्ति, बच्चों का लालन-पालन किया जाता था। इसमें 5 *यज्ञों का अनुष्ठान प्रतिदिन करना अनिवार्य था*

1. **ब्रह्म यज्ञ या ऋषियज्ञ** पठन-पाठन या प्राचीन ऋषि के प्रति कृतज्ञता।
2. **देव यज्ञ** हवन द्वारा देवताओं की पूजा-अर्चना।
3. **पितृ यज्ञ** पितरों का तर्पण (जल और भोजन द्वारा)
4. **नृयज्ञ या मनुष्य यज्ञ** अतिथि सत्कार द्वारा।
5. **भूतयज्ञ** समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के तौर पर चींटियों, पक्षियों, स्वानों आदि को भोजन देना।

- गृहस्थ आश्रम में तीन ऋणों से मुक्त होना भी आवश्यक था। *ये ऋण थे*

1. **देव ऋण** यज्ञों तथा अनुष्ठानों द्वारा देवी-देवताओं की कृपा के प्रति आभार जताकर इस ऋण से मुक्त हुआ जाता था।
2. **ऋषि ऋण** विधिपूर्वक वेदों के अध्ययन से इस ऋण से मुक्ति मिलती थी।
3. **पितृ ऋण** सन्तान को उत्पन्न कर इस ऋण से मुक्त हुआ जाता था।

वानप्रस्थ आश्रम

- यह 50 वर्ष से 75 वर्ष तक माना जाता था। इसके अन्तर्गत गृहस्थ आश्रम के अपने कर्त्तव्यों को त्यागकर वनगमन करना पड़ता था, जहाँ इन्द्रिय संयम तथा स्वाध्याय किया जाता था।

संन्यास आश्रम

- यह 75 वर्ष से मृत्यु पर्यन्त तक था। इसमें समस्त सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर व्यक्ति मोक्ष हेतु प्रत्यनशील रहता था, जिसके लिए वह संन्यास ग्रहण करता था।

पुरुषार्थ

- पुरुषार्थ मनुष्य तथा समाज के बीच सम्बन्धों की व्याख्या करते हैं। पुरुषार्थ का उद्देश्य था मनुष्य के भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना। *शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं*
  1. **धर्म** सामाजिक व्यवस्था का नियामक।
  2. **अर्थ** जिसके माध्यम से मनुष्य भौतिक सुख तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है।
  3. **काम** मनुष्य की सहज इच्छा तथा प्रवृत्तियाँ।
  4. **मोक्ष** जीवन का चरम लक्ष्य पुनर्जन्म से मुक्ति।

आर्थिक स्थिति

- छठी सदी ई. पू. में व्यावसायियों ने अपने-अपने संगठन बना लिए, जिसे श्रेणी कहा जाता था। श्रेणी एक ही कार्य करने वाले लोगों का समूह था, जिसका प्रमुख **श्रेष्ठिन** (सेट्ठी) अथवा **ज्येष्ठक** (जेत्थक) कहा जाता था। व्यापारियों की श्रेणी का प्रधान सार्थवाह होता था। विभिन्न श्रेणियों के बीच एकता स्थापित करने के लिए भण्डारागारिक नामक पदाधिकारी होते थे।
- भारत के प्राचीनतम सिक्के पाँचवीं शताब्दी ई. पू. से ही प्राप्त होते हैं, जिन्हें **आहत सिक्के** (Punch marked coin) कहा जाता है, जो मुख्यत: चाँदी के होते थे। बौद्ध ग्रन्थों में सिक्कों के लिए कहापण अर्थात् कर्षापण का उल्लेख मिलता है।
- शिल्पियों एवं व्यापारियों से कर वसूला जाता था। शिल्पियों से महीने में एक दिन विष्टि (बेगार) कराया जाता था। चुँगी वसूलने वाला अधिकारी शौल्किक या शुल्काध्यक्ष कहलाता था।
- पहली बार इस काल में वास की भूमि और कृषि भूमि अलग-अलग हुई। भूमि माप की इकाई निवर्त्तन कहलाती थी। व्यापार की वृद्धि के लिए **पण्य सिद्धि** संस्कार किया जाता था।

- छठी शताब्दी के ई. पू. में गंगा यमुना दोआब एवं बिहार के आस-पास के क्षेत्रों में द्वितीय नगरीय क्रान्ति हुई।
- रामायण में मगध के लिए वासुमती शब्द का प्रयोग किया गया है।
- महाजनपदों के सैनिक दोधारी तलवार तथा सरकण्डे के बाणों के मुख पर लोहे की नोंक लगाकर उपयोग करते थे।
- महाभारत एवं पुराणों में यदुवंशियों की मथुरा का शासक बताया गया है।

विदेशी आक्रमण

ईरानी आक्रमण

- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश के राजाओं ने किया था। इस वंश के संस्थापक **साइरस** (558-530 ई. पू.) ने भारत पर आक्रमण का असफल प्रयास किया था। भारत पर प्रथम सफल आक्रमण साइरस के उत्तराधिकारी **दारा प्रथम/दारयवहु** (522-480 ई. पू.) ने किया। उसने सर्वप्रथम सिन्धु नदी के तटवर्ती भारतीय भू-भागों को अधिकृत किया।
- सिकन्दर द्वारा 331 ई. पू. में दारा तृतीय को पराजित करने के साथ ही भारत से ईरानी अधिकार समाप्त हो गया।

ईरानी आक्रमण का प्रभाव

- क्षत्रप शासन प्रणाली का विकास हुआ।
- समुद्री मार्ग की खोज से विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला साथ ही खरोष्ठी लिपि तथा आरमेइक लिपि का विकास हुआ।
- अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा भी प्रारम्भ हुई।

यूनानी आक्रमण

- भारत पर प्रथम यूनानी आक्रमण **सिकन्दर** ने 326 ई. पू. में खैबर दर्रे को पार कर किया। आक्रमण के समय तक्षशिला का शासक आम्भी था, जिसने समर्पण कर दिया।
- उसका सबसे प्रसिद्ध युद्ध झेलम नदी के तट पर राजा पोरस के साथ हुआ, जो वितस्ता के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में पोरस की पराजय हुई। वितस्ता के युद्ध को **हाइडेस्पीज का युद्ध** के नाम से भी जाना जाता है। पोरस का राज्य झेलम और चिनाब नदी के बीच पड़ता था।
- सिकन्दर की सहायता करने वाले भारतीय शासक शशिगुप्त, आम्भी और संजय थे। सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इनकार कर दिया था। भारतीय भू-भाग पर सिकन्दर की अन्तिम विजय पाटल राज्य के विरुद्ध थी।
- सिकन्दर ने दो नगरों की स्थापना की। पहला नगर 'निकैया' (विजय नगर) विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा दूसरा अपने प्रिय घोड़े के नाम पर बुकाफेला रखा।
- सिकन्दर विजित भारतीय प्रदेशों को अपने सेनापति फिलिप को सौंप कर वापस लौट गया। लगभग 323 ई. पू. में बेबीलोन में उसका निधन हो गया। सिकन्दर भारत में लगभग 19 **वर्ष** रहा। सिकन्दर के गुरु अरस्तू थे।

सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव

- भारत और यूरोप को निकट आने का अवसर।
- भारत और यूनान के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष सम्पर्क की स्थापना।
- पश्चिमोत्तर भारत के अनेक छोटे-छोटे राज्यों का एकीकरण।
- सिकन्दर के इतिहासकारों से मूल्यवान भौगोलिक विवरण एवं तिथि सहित इतिहास की प्राप्ति।
- मुद्रा निर्माण की कला भारत ने सीखी।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. निम्नलिखित में से किन राज्यों का सम्बन्ध बुद्ध के जीवन से था? **[IAS 2014, 15]**

1. अवन्ति 2. गान्धार 3. कोसल 4. मगध

कूट

(a) 1, 2 और 3 *(b)* 2 और 3 *(c)* 1, 3 और 4 *(d)* 3 और 4

2. प्राचीन नगर तक्षशिला निम्नलिखित में से किनके बीच स्थित था?

(a) सिन्धु तथा झेलम *(b)* झेलम तथा चिनब
(c) चिनाब तथा रावी *(d)* रावी तथा व्यास

3. सिकन्दर के हमले के समय उत्तर भारत पर निम्नलिखित राजवंशों में से किस एक का शासन था? **[IAS 2000]**

(a) नन्द *(b)* मौर्य *(c)* शुंग *(d)* कण्व

4. भारत में सिकन्दर की सफलता निम्न कारणों से थी **[UPPCS 2003]**

1. उस समय भारत में कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं थी।
2. उसकी फौज बेहतर थी।
3. उसे देशद्रोही शासकों से सहायता मिली।
4. वह एक अच्छा प्रशासक था।

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3 *(c)* 2, 3 और 4 *(d)* ये सभी

5. गौतम बुद्ध के समय का प्रसिद्ध वैद्य जीवक किसके दरबार से सम्बन्धित था? **[UPPCS 2006]**

(a) बिम्बिसार *(b)* चण्डप्रद्योत *(c)* प्रसेनजित *(d)* उदयन

6. मालवा क्षेत्र पर मगध की सत्ता का विस्तार निम्न में से किसके शासन काल में हुआ था?

(a) बिम्बिसार के *(b)* अजातशत्रु के
(c) उदयभद्र के *(d)* शिशुनाग के

7. अभिलेखीय साक्ष्य से प्रकट होता है कि नन्द राजा के आदेश से एक नहर खोदी गई थी? **[UPPCS 1999]**

(a) अंग में *(b)* बंग में
(c) कलिंग में *(d)* मगध में

8. सुमेलित कीजिए **[UPPCS 2008]**

सूची I (उत्तर प्रदेश के प्राचीन जनपद)	सूची II (राजधानी)
कुरू	सांकेत
पांचाल	कौशाम्बी
कौशल	अहिच्छत्र
वत्स	इन्द्रप्रस्थ

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	*(b)*	4	3	1	2
(c)	3	4	2	1	*(d)*	4	2	3	1

9. निम्नलिखित मगध राजवंशों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए **[Csg PCS 2008]**

1. नन्द वंश 2. शुंग वंश
3. मौर्य वंश 4. हर्यक वंश

कूट

(a) 2, 1, 4 और 3 *(b)* 4, 1, 3 और 2
(c) 3, 2, 1और 4 *(d)* 1, 3, 4 और 2

10. मगध के किस प्रारम्भिक शासक ने राज्यारोहण के लिए अपने पिता की हत्या की एवं स्वयं इसी कारणवश अपने पुत्र द्वारा मारा गया? **[UPPCS 2007]**

(a) बिम्बिसार *(b)* अजातशत्रु
(c) उदयिन *(d)* नागदशक

11. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अन्य तीनों के समसामयिक नहीं था? **[IAS 2005]**

(a) बिम्बिसार *(b)* गौतम बुद्ध
(c) मिलिन्द *(d)* प्रसेनजीत

12. भारत के प्राचीनतम प्राप्त सिक्के? **[UPPCS 2010]**

(a) ताँबे के थे *(b)* सोने के थे
(c) राँगा के थे *(d)* चाँदी के थे

13. सुमेलित कीजिए **[UPPCS 2000]**

सूची I (राजा)	सूची II (राज्य)
चण्डप्रद्योत	मगध
उदयन	वत्स
प्रसेनजित	अवन्ति
अजातशत्रु	कोसल

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	*(b)*	4	3	2	1
(c)	3	2	4	1	*(d)*	4	1	3	2

14. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध ब्राह्मण धर्म से नहीं है?

(a) शुल्व सूत्र *(b)* श्रोत सूत्र *(c)* भगवती सूत्र *(d)* धर्म सूत्र

15. यूनानी आक्रमण से संबन्धित निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन असत्य है?

1. प्रथम यूनानी आक्रमण के समय तक्षशीला का शासक आम्भी था।
2. वतिस्ता के युद्ध को हाइडेस्पीज के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।

कूट

(a) केवल 3 *(b)* केवल 2
(c) 1 तथा 2 *(d)* न तो 1 न ही 2

1. (c) **2.** (a) **3.** (a) **4.** (b) **5.** (a) **6.** (d) **7.** (c) **8.** (b) **9.** (b) **10.** (b)
11. (c) **12.** (d) **13.** (c) **14.** (c) **15.** (d)

अध्याय पाँच

छठी सदी ई. पू. के धार्मिक आन्दोलन

''छठी सदी ई. पू. न केवल भारत के लिए, अपितु समस्त विश्व के लिए एक विपुल क्रान्ति-परिवर्तन का काल था। इस दौरान भारत में वैदिक धर्म की प्रतिक्रिया स्वरूप बौद्ध और जैन सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिसने भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन का सूत्रपात किया। इस दौरान विश्व के अनेक देशों में भी बौद्धिक आन्दोलन प्रारम्भ हुए, जिनमें चीन में कन्फ्यूशियस, ईरान में जरथुष्ट तथा यूनान में पाइथागोरस प्रमुख है।''

जैन धर्म

- जैन शब्द संस्कृत के **जिन** शब्द से बना है, जिसका अर्थ-विजेता होता है अर्थात् जिन्होंने अपने मन, वाणी एवं काया को जीत लिया हो। जैन साधुओं को निर्ग्रन्थ (बन्धनरहित) कहा गया है।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव** या **आदिनाथ** थे, जिनका जन्म अयोध्या में हुआ था। आदिनाथ ने कैलाश पर्वत पर शरीर का त्याग किया था। ऋषभदेव और अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- 23वें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ** काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। अपने अनुयायियों (निर्ग्रन्थ) को इन्होंने चातुर्याम शिक्षा या चार आचरण पालन करने को कहा—सत्य (सदा सत्य बोलना), अहिंसा (प्राणियों की हिंसा न करना), अस्तेय (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (सम्पत्ति न रखना)। सम्मेद शिखर (पारसनाथ) पर उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया।

महावीर स्वामी

- जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी को माना जाता है, जिनका वास्तविक नाम वर्धमान था। इन्होंने 30 वर्ष की अवस्था में अपने अग्रज नन्दिवर्द्धन से आज्ञा लेकर गृहत्याग दिया। बारह (12) वर्ष की कठोर तपस्या के बाद जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर **केवलिन** कहलाए। सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण उन्हें जिन (विजेता) कहा गया। तपस्या के रूप में अद्‌भुत पराक्रम दिखाने के कारण वे महावीर कहलाए। उन्हें अर्हत (योग्य) तथा निर्ग्रन्थ (बन्धनरहित) के नाम से भी जाना गया। बौद्ध साहित्य में महावीर को निगण्ठनाथ पुत्र कहा गया है।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर ने अपना प्रथम उपदेश राजगृह के निकट वितुलांचल पहाड़ी पर मेघकुमार को दिया। जमालि (दामाद) इनका प्रथम शिष्य बना। चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना इनकी प्रथम भिक्षुणी हुई। महावीर के ग्यारह शिष्यों को गणधर कहा गया। महावीर के जीवनकाल में ही दस गणधरों की मृत्यु हो गई, केवल सुधर्मन जीवित बचा।

जीवन परिचय (महावीर)

जन्म	540 ई. पू., कुण्डग्राम *(वैशाली)*
पिता	सिद्धार्थ *(ज्ञातृक कुल के प्रधान)*
माता	त्रिशला *(लिच्छवी गणराज्य के प्रधान चेटक की बहन)*
पत्नी	यशोदा *(कुण्डिन्य गोत्र की कन्या)*
पुत्री	प्रियदर्शना (अणोज्जा)
दामाद	जमाली
मृत्यु	468 ई. पू., पावापुरी *(नालन्दा)* में राजा हस्तिपाल के यहाँ